दौर-ए-सितम

(दौर-ए-कोरोना काल)

ग़ज़ल संग्रह

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

दौर-ए-सितम
(दौर-ए-कोरोना काल)

ग़ज़ल संग्रह

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

निवेदन

ई-पुस्तक के रूप में तैयार 114 ग़ज़लों का एक संकलन **सुकून-ए-ख़ातिर** 21जून 2020 को ग़ज़ल के आशिक़ों को समर्पित किया था।

वर्तमान ग़ज़ल संग्रह **कोरोना काल** की ज़रूरी नज़रबंदी के दौरान महसूस की गई अनुभूतियों का एक पृथक दस्तावेज़ है। पिछले ग़ज़ल संग्रह की अंतिम 28 गज़लें भी कोरोना काल में ही तैयार हुईं थीं। अंत: उन्हें भी सम्पूर्णता के लिहाज़ से इस संग्रह में रखा गया हैं। आशा है कि ग़ज़ल के आशिक़ जिन्होंने कोरोना काल की नज़रबंदी को झेला है, इन ग़ज़लों से विशेष निकटता महसूस करेंगे:-

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

बी-607, सत्या एन्क्लेव, लेक एवेन्यू, कांके रोड, राँची – 834 008

दिनांक: 18 सितम्बर, 2020

अनुक्रम

तब्दील अगर कर सकें थोड़ा नज़र को आप

तब्दील[1] अगर कर सकें थोड़ा नज़र[2] को आप,
मुमकिन[3] है समझने लगें मेरी नज़र को आप।

अपनी सियाह[4] जुल्फ़[5] से ज्यादा सियाह रात,
कोई गुज़ारी होती तो रोते सहर[6] को आप।

ख़ुद अपना पता ले के पता पूछ रहे हैं,
पहचान नहीं पायेंगे दीवारो-ओ-दर[7] को आप।

रफ़्तार की दीवानगी[8] इसका मिज़ाज[9] है,
हमसे जियादा[10] जानते हैं इस शहर को आप।

दरिया[11] में डूब मरने-की लज़्ज़त-से[12] बे-ख़बर[13],
साहिल[14] से देखते रहे हरदम लहर को आप।

महसूस तपिश[15] कीजिये एक बार पोंछकर,
फिर मानेंगे दिल फूंकते[16] आब-ए-नज़र[17] को आप।

मिलती रहेगी मुझको मेरे होने की ख़बर,
लेते रहेंगे जब तलक मेरी ख़बर को आप।

हाकिम[18] की सोहबत[19] का असर देख रहे हैं,
वादा इधर-का करते हैं, जाते उधर-को आप।

उठती है टीस आज तलक गाहे-बगाहे[20],
पहचानते तो हैं मेरे ज़ख्म-ए-जिगर[21] को आप।

हद-ए-नज़र[22] से थे परे कुछ दूर बज़्म में,
देखा तलाशते थे किसी सुख़नवर[23] को आप।

हालात[24] के हाथों नहीं मजबूर[25] है 'गौतम',
एक रोज़ समझ जायेंगे उसके सबर[26] को आप।

---

[1] परिवर्तित [2] आँख (दृष्टिकोण) [3] संभव [4] काले [5] सर के बाल [6] सुबह
[7] दरवाजा-दीवार (घर) [8] पागलपन [9] स्वभाव [10] अधिक [11] नदी
[12] स्वाद (मज़ा) [13] अज्ञानी [14] किनारा [15] ताप [16] जलाना
[17] आँख का पानी (आँसू) [18] साहेब [19] संगत [20] कभी-कभी
[21] मन के घाव [22] दृष्टि की सीमा [23] लेखक/शायर
[24] परिस्थिति [25] लाचार/विवश [26] धैर्य

कहीं बैठ जाएँ घड़ी-दो-घड़ी

कहीं बैठ जाएँ घड़ी-दो-घड़ी[1],
चलो मुस्कुराएं घड़ी-दो-घड़ी।

ये सन्नाटे चुभने लगे कान में,
ज़रा गुनगुनाएं घड़ी-दो-घड़ी।

कोई बर्क़[2] आमादा[3] गिरने को है,
दें सबको दुआएं घड़ी-दो-घड़ी।

समझते ज़रा ख़बर-ए-दौर-ए-रवाँ[4],
ठहरती हवाएं घड़ी-दो-घड़ी।

ख़िज़ाँ[5] कह रही थी परिंदों[6] से कल,
यहाँ चहचहाएं घड़ी-दो-घड़ी।

उधर सब लिये हाथ में संग[7] हैं,
उधर घूम आएं घड़ी-दो-घड़ी।

है फ़ुर्सत[8] मिली बाद मुद्दत[9] अगर,
तो यारी निभाएं घड़ी-दो-घड़ी।

अगर थक गये हैं मनाते हुए,
तो ख़ुद रूठ जाएँ घड़ी-दो-घड़ी।

यक़ीं[10] है रहेगा ना फिर मुद्दआ[11],
ना बोलें-बताएं घड़ी-दो-घड़ी।

सुना है हवा चार सू[12] है यही,
किधर होके आएं घड़ी-दो-घड़ी।

पिघल जायेगी तारी[13] मनहूसियत[14],
किसी को हँसाएं घड़ी-दो-घड़ी।

बहुत देर सजदे[15] में माइल[16] रहे,
चलो सर उठाएं घड़ी-दो-घड़ी।

थमेगा नहीं हौसलों[17] का जुनूँ[18],
रहें गर बलाएँ[19] घड़ी-दो-घड़ी।

चलो साफ़गोई [20] से बातें करें,
नज़र[21] ना चुराएं घड़ी-दो-घड़ी।

किसी काम तो आये 'गौतम' कभी,
उसे आज़माएं[22] घड़ी-दो-घड़ी।

---

[1]दो पल के लिए [2]आसमानी बिजली [3]जिद में
[4]आज की दुनिया की सूचना [5]पतझड़ [6]पंछी
[7]पत्थर [8]अव्यस्त [9]बहुत समय के बाद [10]विश्वास
[11]विवाद [12]चारों ओर [13]फैला हुआ [14]ऊब
[15]नमाज़ की एक मुद्रा [16]झुका हुआ
[17]हिम्मत [18]पागलपन [19]आपदाएं
[20]स्पस्ट बात [21]आँख [22]परखें

कुछ तो होना था हो गया आख़िर

कुछ तो होना था हो गया आख़िर,
हो एहतराम[1] सुकून-ए-ख़ातिर[2]।

बनके बुत[3] बैठे हैं ख़फ़ा[4] होकर,
बुतपरस्ती[5] ने बनाया क़ाफ़िर[6]।

राब्ता[7] यूँ बना रहा उनसे,
ख़्वाब[8] में मेरे वो रहे हाज़िर[9]।

कोई ग़म होगा रोने वाले का,
कौन रोता है किसीकी ख़ातिर[10]?

मुझको तारीख़[11] पर तारीख़ मिली,
मेरा मुंसिफ़[12] है किस कदर[13] साबिर[14]।

कल थे उनकी गली के दीवाने[15],
आज उनकी गली के मोहाजिर[16]।

सबसे नज़रें चुराने वाले ने,
सूरत-ए-हाल[17] कर दिया ज़ाहिर[18]।

एक रिवायत[19] है, हाल[20] पूछ लिया,
ये ज़रूरी[21] नहीं हों मुतासिर[22]।

कासा-ए-दस्त-ए-दुआ[23] खाली है,
उसे फ़क़ीर[24] कहें या यासिर[25]।

बन गया है मेयार[26]-ए-दिलजोई[27],
ख़ास[28] सोहबत[29] ने बनाया माहिर[30]।

जज़्ब[31] कितना, कहाँ, किया किसने,
अब्र[32] को है ख़बर[33], वो है नाज़िर[34]।

हम भी उनको सलाम करते हैं,
ग़ालिब-ओ-दाग-ओ-मीर-ओ-साहिर[35] ।

पाँव रखिये ज़मीन[36] पर 'गौतम',
मिल गये ख़ाक[37] में सारे क़ादिर[38] ।

---

[1]सम्मान [2]मन पर बोझ [3]मूर्ति [4]कुपित [5]मूर्ति पूजा
[6]कुफ्र करने वाला [7]संबंध [8]सपना [9]उपस्थिति
[10]लिए [11]अगली तिथि [12]न्यायमूर्ति [13]अति सीमा तक
[14]धैर्यवान [15]पागल [16]शरणार्थी [17]वस्तुस्थिति [18]विदित
[19]परिपाटी/चलन [20]कुशलक्षेम [21]आवश्यक [22]प्रभावित
[23]हाथ मिलाकर बनाया गया दुआ का कटोरा [24]भिखारी
[25]अमीर [26]मानक [27]दिलासा [28]विशिष्ट [29]संगत
[30]विशेषज्ञ [31]सोखना [32]बादल [33]जानकारी
[34]पर्यवेक्षक [35]ग़ालिब, दाग़, मीर और साहिर
[36]भूमि [37]धूल [38]समर्थवान

गुल खिले कितने बता, जो हुए रफ़ा ना बता

गुल[1] खिले कितने बता, जो हुए रफ़ा[2] ना बता,
प्यार व्यापार नहीं, घाटा-ओ-नफ़ा[3] ना बता।

बस बता उसने मेरा हाल अगर पूछा हो,
आज वो किस कदर मिला तुझे ख़फ़ा[4] ना बता।

तू बता उसने बुलाया हो अगर मक़्तल[5] में,
पीरो-मुर्शिद[6] की तरह अपना फ़लसफ़ा[7] ना बता।

रुख़[8] हवाओं का उधर क्या है जानने के लिये,
कितने पुर्ज़ों[9] में उड़ा मेरा लिफ़ाफ़ा ना बता।

आँख से साक़ी[10] की पीने की हमारी ज़िद है,
कितना आता है मज़ा पीने में सुलफ़ा[11], ना बता।

तू निभा पास मेरे बैठ के फ़र्ज़-ए-क़ासिद[12],
कैसे हो जाते हैं मुद्दे[13] रफ़ा-दफ़ा[14] ना बता।

जो गये हैं मुझे गिराके उसकी महफ़िल[15] में,
मेरी दिलजोई[16] को तू उनको बेवफा[17] ना बता।

तू बता क्या है गिज़ा[18] दर्द-ए-दिल[19] को सहने की,
दर्द-ए-दिल के लिये तू राज़-ए-शिफा[20] ना बता।

लौट के जाने पर गर हाल[21] पूछ ले कोई,
तो वफ़ा[22] मेरी बता, यार की जफ़ा[23] ना बता।

हमको मंज़ूर[24] है हर फ़ैसला[25] उसका 'गौतम',
दी सज़ा[26] कितनी बता, तू मुझे दफ़ा[27] ना बता।

---

[1]पुष्प [2]गायब [3]हानि-लाभ [4]कुपित [5]वधस्थल [6]बुजुर्ग-गुरू [7]दर्शन
[8]दिशा [9]टुकड़ों में [10]शराब पिलाने वाला [11]तम्बाखू/चरस

[12]सन्देश वाहक का काम [13]मामला [14]सुलझाना
[15]गोष्ठी [16]दिलासा [17]विश्वासघाती [18]आहार
[19]हृदय की पीड़ा [20]उपचार की विधि
[21]कुशल-क्षेम [22]प्यार [23]अत्याचार
[24]स्वीकार्य [25]निर्णय [26]दंड
[27]कानून की धारा

लगाके बांह का तकिया, पड़े हैं आँख को मीचे

लगाके बांह का तकिया, पड़े हैं आँख को मीचे,
सुकूँ[1] के दिन दिखायी दे रहें हैं पेड़ के नीचे।

अकेलेपन से उकताये दरख़्तों[2] का है नज़राना[3],
गलीचे सूखे पत्तों के बिछे हैं बदन के नीचे।

वहाँ पसरा है सन्नाटा[4] मगर एक सनसनी[5] भी है,
कहाँ से लोग ये आये, कहाँ इनके गली-कूचे[6]?

ख़लल[7] कोई ना पड़ जाये कहीं सपनीली आँखों में,
यहाँ तक बारहा[8] आकर सबा[9] ने पाँव हैं खींचे।

ये तय है अब्र[10] भी बरसेंगे, तबतक एहतियातन[11] ही,
चमन[12] को आँख से टपके लहू की बूँद ही सीचे।

बहुत बेदार[13] हैं लेटे हुए बे-हरकत-ओ-करवट[14],
अगर एक इस्तगासा[15] हो तो होंगे दूर तक चर्चे।

परिंदों को गुलेलों से न छेड़ो, शोर से उनके,
कहीं अंगड़ाई लेकर उठ न जायें मुट्ठियां भींचे।

उन्हें जिद है पतंगों की हो डोरी उनके हाथों में,
तुम्हारे पास केवल लट्टू-फिरकी और कुछ कंचे।

ख़बर कोई नहीं पहुँची, है लाज़िम[16] फ़िक्र[17] का होना,
ख़बर लो ख़बरगीरों[18] की, कहाँ निकले, कहाँ पहुँचे!!

जो सो पाते नहीं थे चाँदनी में रात भर 'गौतम',
उन्हें किसने सुनाई लोरियां? पूछेंगे चुनांचे[19]।

---

1 चैन 2 पेड़ 3 भेंट 4 मौन 5 बेचैनी 6 घर-गली का पता 7 अड़चन 8 बार-बार
9 हवा 10 बादल 11 सावधानी से 12 बाग़ 13 सजग

14 बिना हिले-डुले और करवट लेते 15 फौजदारी मामला
16 आवश्यक 17 चिंता 18 पत्रकार 19 इसलिए

मिले हैं रेत पे सहरा में हर-सू नक़्श-ए-पा गहरे

मिले हैं रेत पे सहरा[1] में हर-सू[2] नक़्श-ए-पा[3] गहरे,
ख़ुदा[4] जाने यहाँ से जो हैं गुज़रे[5] वो कहाँ ठहरे।

सभी दरवाजे घर के बंद, पर्दे हैं दरीचों[6] पर,
किसी की बद-नज़र[7] से बचने की ख़ातिर[8] हैं ये पहरे[9]।

नहीं नज़रें[10] मिलाते अब, कहीं से सुन के आये हैं,
किसी के चश्म-ए-नम[11] में डूबने वाले नहीं उबरे।

कोई सुलझा नहीं पाता है रिश्तों की हक़ीक़त[12] को,
किसी को भूलते पल में, कोई ता-उम्र[13] ना बिसरे।

अगर्चे[14] मयकदे[15] में मय[16] पे हक़[17] सबका बराबर है,
पिलाते हमको ख़ून-ए-दिल[18] रहे, साक़ी[19] नहीं सुधरे।

हज़ारों ख़्वाबों[20] का होता है ख़ूँ[21] हर रात आँखों में
सहर[22] में फैल जाते हैं क्षितिज पर ख़ून के कतरे[23]।

वहाँ से भारी कदमों से जो लौटे हैं, बताते हैं,
बहुत है भीड़, गलियाँ तंग और हैं रास्ते संकरे।

हुआ था शोर आँधी से बगावत[24] की दरख़्तों[25] ने,
था बे-आवाज़[26] वो सब्ज़ा[27], थे जिसके दबने के ख़तरे।

बहुत है डूबते को एक तिनके का सहारा भी,
पड़ा जब जोश ठंडा लोग जाकर धूप में पसरे।

जो दम भरते थे लाकर चाँद-तारों को सजा देंगे,
वो कहते हैं मोहब्बत करने वाले होते हैं फुकरे[28]।

बुलाया था गया मक़्तल[29] में सौ-सौ मिन्नतें[30] करके,
परेशाँ[31] कर रहे मक़्तूल[32] को क़ातिल[33] के अब नखरे।

जड़ों को सींचने में काम आते हैं नहीं आँसू,
वो पत्ते फिर कहाँ लगते हैं जो शाख़ों[34] से हैं उतरे।

हुकुम[35] है, लोग रखें अपने चेहरे अब नक़ाबों[36] में,
करें वो क्या? लगाये हैं जो चेहरे पर कई चेहरे।

रहमदिल[37] मान लेंगे गर क़ुबूल[38] ऐसे भी सजदे[39] हों,
थकन से चूर संगे-दर[40] पे हैं जिनके बदन दुहरे।

बहुत ही सख़्त-जाँ[41] हैं और ग़ैरतमंद[42] भी 'गौतम',
सलीबें[43] अपनी काँधे पर उठाकर लोग जो गुजरे।

---

*[1] रेगिस्तान [2] सब ओर [3] पदचिन्ह [4] ईश्वर [5] गए [6] खिड़कियाँ [7] बुरी नज़र
[8] लिए [9] सुरक्षा उपाय [10] आँख [11] आँख के आँसू [12] सत्यता [13] सारी आयु
[14] यद्यपि [15] शराबखाना [16] शराब [17] अधिकार [18] हृदय का खून
[19] शराब पिलाने वाला [20] सपने [21] खून (मरना) [22] सुबह [23] छींटे
[24] विद्रोह [25] पेड़ [26] खामोश [27] घास [28] बेकार [29] वधस्थल
[30] आग्रह [31] हैरान [32] मारा जाने वाला [33] खूनी [34] डाल
[35] आदेश [36] घूँघट [37] दयावान [38] स्वीकार
[39] इबादत में झुकने की मुद्रा [40] दरवाजे का पत्थर
[41] अपार सहनशील [42] आत्मसम्मान वाला [43] सूली*

आया लगा के देखिये इत्रो-फुलेल है

आया लगा के देखिये इत्रो-फुलेल[1] है,
वो आज कमरबंद[2] में खोंसे गुलेल है।

अमराई में झूला कोई अब डालता नहीं,
बाज़ार में इफ़रात[3] में आमों की सेल[4] है।

देखा है सौ तरीकों से पत्तों को फेंटकर,
आती उसीके हाथ में इक्के की ट्रेल[5] है।

रफ़्तार से आता है हवा पर सवार वो,
बाद-ए-सबा[6] की हाथ में रखता नकेल है।

होगा अज़ीज़[7] सबका ये उखड़ा हुआ दरख़्त[8],
टुकड़ों में जलाने के लिये रेल-पेल है।

सूखे हुए दरिया[9] पे भी कल बात करेंगे,
तामीर[10] किया आज घर में बोरवेल[11] है।

बादल से गिर के बूंदें कहाँ लापता हुईं,
तपती ज़मीं के साथ ये कैसी कुलेल है?

दरख़्वास्त[12] के बदले मिली अल्फ़ाज़-ए-तसल्ली[13],
साहिब के लिए मामला फुरसत का खेल है।

सीटी बजा-बजा के जगाया है ख़्वाब[14] को,
ठहरे बिना यहाँ से गई एक रेल है।

मंज़िल[15] सरक के पास चली आती है 'गौतम',
इन रास्तों से जिसका सही तालमेल है।

---

[1]इत्र और सुगन्धित तेल [2]कमर पेटी [3]अधिकता [4]बिक्री
[5]ताश के एक जैसे तीन पत्ते [6]सुबह की हवा [7]दोस्त

8पेड़ 9नदी 10योजना 11नल कूप 12प्रार्थनापत्र
13मौखिक दिलासा 14सपना 15लक्ष्य

आज़ाद परिंदों की अय्यारी तो कीजिए

आज़ाद[1] परिंदों[2] की अय्यारी[3] तो कीजिए,
उड़ने के लिये पहले तैयारी तो कीजिए।

आबो-हवा[4] मुफ़ीद[5] कहाँ सबसे है ज़्यादा,
बसने से पहले रायशुमारी[6] तो कीजिए।

घोड़े हवाई होते हैं बिगड़ैल, बे-लगाम,
पहले किसी गधे की सवारी तो कीजिए।

दरबार की रौनक ये मुसाहिब[7] हैं काम के,
बेमन से सही गुफ़्तगू[8] प्यारी तो कीजिये।

मुश्किल घड़ी में काम बनाने के वास्ते,
अपनी ज़बाँ जनाब दोधारी तो कीजिए।

खासा वजन है आपकी आवाज़ में माना,
थोड़ा लिबास-ओ-काया[9] भी भारी तो कीजिए।

सोहबत[10] का मज़ा लेने की ख्वाहिश[11] हुई है गर,
अपनी नज़र को आप कटारी तो कीजिये।

है फन[12] ये काम का गधे को बाप बनाना,
मित्रों के साथ पहले मक्कारी तो कीजिए।

मैदान जीतना बहुत आसान है 'गौतम',
इस वास्ते थोड़ी मगजमारी[13] तो कीजिए।

---

1 स्वतंत्र 2 पंछी 3 जासूसी 4 हवा-पानी 5 लाभकारी 6 अभिमत
7 दरबारी/चापलूस 8 बातचीत 9 पहनावा और शरीर
10 संगत 11 इच्छा 12 कौशल 13 दिमाग लगाना

दरख़्तों पर नये फल आ रहे हैं

दरख़्तों[1] पर नये फल आ रहे हैं,
गुलेलों के सबक़[2] याद आ रहे हैं।

पतंगबाज़ों[3] के कब्ज़े[4] में फ़लक[5] है,
परिंदे[6] उड़ने से कतरा रहे हैं।

जो बैठक में सजे हैं बोनसाई[7],
वो छोटे गमलों में उकता रहे हैं।

थी मांगी एक जलसे[8] की इजाज़त[9],
वहाँ हंगामा[10] अब बरपा[11] रहे हैं।

ये सब्ज़े[12] राह देंगे रास्तों को,
नियम से रोज़ कुचले जा रहे हैं।

ये पत्ते मत बुहारो, काम के हैं,
हवाओं का ये रुख़[13] बतला रहे हैं।

यक़ीं[14] इमदाद[15] का उनको हुआ तो,
नखों-से छालों को खुजला रहे हैं।

लगी हैं हर गली के साथ गलियाँ,
इन्हीं में खुद को सब भटका रहे हैं।

थे दौड़े रात भर ख़्वाबों[16] के पीछे,
सुबह के वख्त अब अलसा रहे हैं।

उन्हें दरकार रोटी की नहीं है,
वो लफ़्ज़ों [17] को चबाकर खा रहे हैं।

ख़बर अख़बारों में है खास 'गौतम',
सभी अब ख़बरों से घबरा रहे हैं।

---

1 पेड़ 2 पाठ 3 पतंग उड़ाने वाले 4 नियंत्रण 5 आकाश
6 पंछी 7 बौने पौधे (जापानी कला) 8 समारोह
9 अनुमति 10 हल्ला 11 खड़ा करना
12 घास 13 दिशा 14 विश्वास
15 मदद 16 सपने 17 शब्दों को

ढलान देख कर वो भी मचल गया होगा

ढलान देख कर वो भी मचल गया होगा,
वो दौड़ने लगा होगा, फिसल गया होगा।

वहाँ तो धूप में डामर[1] पिघलने लगता है,
वो नंगे पाँव गया होगा, जल गया होगा।

कल अब्र[2] आयेंगे, छायेंगे और बरसेंगे,
ये सोच लेने से मौसम बदल गया होगा।

उमस से बह के पसीना ज़मीं[3] पे टपका है,
नई उम्मीद से सहरा[4] संभल गया होगा।

वहाँ घर-जैसे इंतज़ाम[5] थे, पर घर नहीं था,
इसी लिये वो ऊब कर निकल गया होगा।

यहाँ तलक तो मिले हैं निशान पैरों के,
वो बावला यहाँ से सर के बल गया होगा।

जला लिये हैं दोनों हाथ मल के आँखों को,
उतर के आँख में लोहू उबल गया होगा।

लुका-छिपी थी धूप-छांव की शजर[6] के तले,
यहाँ जो बैठा घड़ी भर बहल गया होगा।

कहा था उससे ना मिलियेगा गर्मजोशी[7] से,
वो आदमी था मोम-सा, पिघल गया होगा।

वो उठ के नींद से क्योंकर जवाब दे 'गौतम,
हसीन[8] ख़्वाब[9] निगाहों में घुल गया होगा।

---

1 तारकोल 2 बादल 3 भूमि 4 रेगिस्तान 5 व्यवस्था 6 पेड़
7 उत्साह के साथ 8 सुन्दर 9 सपना

पहले बहस में रहती थीं अख़बार की बातें

पहले बहस[1] में रहती थीं अख़बार की बातें,
करता है आजकल महज़[2] घरबार की बातें।

वो अपनी ज़िंदगी से है नाराज़ इस कदर,
मक़्तल[3] में भी करता रहा तलवार की बातें।

अचकन[4] में सजाते हैं नया रोज़ इक गुलाब,
वो चाहते हैं चमन में हों ख़ार[5] की बातें।

हैरान सबको कर दिया ये राज़[6] खोल कर,
सहरा[7] को हैं पसंद नौबहार[8] की बातें।

हैरत-ज़दा[9] करने लगी है आदते-नासेह[10],
करता है तलब[11] रोज़ गुनहगार[12] की बातें।

चारागरी[13] नाकाम[14], दुआ और दवा भी
लगने लगी फ़रेब-सी[15] बीमार की बातें।

उम्मीद[16] है कल जिरह[17] वकीलों के बीच हो,
मुंसिफ़[18] ने सुनी आज हैं तकरार[19] की बातें।

पाकर रिपोर्ट हो गया हाकिम[20] को इत्मीनान[21],
सबको समझ में आ गयीं सरकार की बातें।

कानों ने तो सुना नहीं, आँखें गवाह हैं,
जुगनू से हो रही थी अंधकार की बातें।

जो आफ़ताब[22] से नहीं आँखें मिला सके,
करते हैं हमसे चाँद से दीदार[23] की बातें।

इस रहगुज़र[24] के साथ संग-ए-मील[25] है बेजान[26],
इनसे नहीं करता कोई रफ़्तार की बातें।

जब बेज़ुबान[27] दिल था तो लब भी थे बेज़ुबान,
हंगामा[28] कर गयीं दिल-ए-बेदार[29] की बातें।

पूछा है बार-बार, बताता नहीं 'गौतम',
वो किसके लिये लिखता है बेकार की बातें।

---

1 विवाद 2 केवल 3 वधस्थल 4 लम्बा बंद गले का कोट 5 कांटा 6 भेद
7 रेगिस्तान 8 वसंत 9 चिंतित 10 उपदेशक की आदत 11 पूछता
12 पापी 13 उपचार 14 असफल 15 झूठी 16 आशा 17 तार्किक बहस
18 न्यायमूर्ति 19 झगड़ा 20 प्रशासक 21 तसल्ली 22 सूरज 23 दर्शन
24 राह 25 मील का पत्थर 26 निष्प्राण 27 खामोश
28 हल्ला 29 जागरूक हृदय

बात बे-बात कब निकलती है?

बात बे-बात कब निकलती है?
बात-तो बात-से निकलती है।

कानाफूसी तलक पहुँचने पर,
बाल-की खाल भी निकलती है।

बात जो गोल-मोल होती है,
वो लुढ़कते हुए निकलती है।

बात लगती है जाके सीने में,
बात बेबाक[1] जो निकलती है।

बेज़बाँ[2] लोग बोलते हैं जब,
तब तो सरकार भी निकलती है।

बातों-बातों में बतकहा हो तो,
फिर कहाँ से कहाँ निकलती है।

खास बातों में उलझ जाने पर,
बात दिल में दबी निकलती है।

बात हो जाती है ज़माने[3] की,
बात घर-से अगर निकलती है।

चुटकियों मे सफ़र[4] गुजरता है,
बात पर बात जब निकलती है।

बात उसकी ना करें बे-पर्दा[5],
जानकर उसकी जां[6] निकलती है।

बात का हो सिरा[7] ज़रूरी नहीं,
बैठे-ठाले[8] भी ये निकलती है।

बैठ कर देखिये तनहाई में,
बात तनहाई से निकलती है।

पर लगाना है लाज़िमी[9] 'गौतम'
बात बे-पर की जब निकलती है।

---

1 खुली बात 2 खामोश 3 दुनिया 4 यात्रा 5 भेद खोलना
6 जान/प्राण 7 छोर 8 यूँही 9 आवश्यक

चारागरी हो जानता क़ातिल, वही सही

चारागरी[1] हो जानता क़ातिल[2], वही सही[3],
हर्फ़-ए-दुआ[4] हो लब[5] पे, मुक़ाबिल[6] वही सही।

उसकी अदा[7] में मेहर[8] भी हैं, तल्खियां[9] भी हैं,
जिस वक्त[10] हमें जो हुआ हासिल[11], वही सही।

नाक़ाबिल-ए-तारीफ़[12] तो हैं हसरतें[13] तमाम,
जो हैं तेरी तारीफ़ के क़ाबिल[14], वही सही।

कमज़ोर नज़र में नहीं मंज़र[15] है कोई साफ़,
ख़्वाबों[16] में तेरा चेहरा है झिलमिल, वही सही।

हम रोज़ उतारें तुम्हारी जान का सद्का[17],
तुम रोज़ कहो फ़र्द-ए-बातिल[18], वही सही।

गो[19] डूबने के वास्ते दरिया[20] नहीं बुरा,
जिन आंखों में गिर्दाब-ओ-साहिल[21], वही सही।

ख़िदमत[22] में आज भी हैं खड़े आप की ख़ातिर[23],
लगते रहे हम आपको काहिल[24], वही सही।

तेरे लिये क़फ़स[25] हूँ मैं, मेरे लिये है तू,
दुनिया के लिये दोनों ही जाहिल[26], वही सही।

माना है ज़ुल्फ[27] चाँदनी के कब्जे में 'गौतम',
अब भी बिखर के करती है ग़ाफ़िल[28], वही सही।

---

1 उपचार 2 क़त्ल करने वाला 3 वही ठीक है 4 प्रार्थना के शब्द 5 होंठ
6 सामने 7 व्यवहार 8 कृपा 9 उग्रता 10 समय 11 मिला 12 बड़ाई के अयोग्य
13 इच्छाएं 14 योग्य 15 दृश्य 16 सपना 17 नज़र उतारना 18 झूठा आदमी
19 यद्यपि 20 नदी 21 भँवर और किनारा 22 सेवा 23 लिए 24 आलसी
25 पिंजड़ा/कैदखाना 26 गंवार 27 सर के बाल 28 बे-सुध

सहरा-ओ-समन्दर के दरमियान ये दरिया

सहरा-ओ-समन्दर[1] के दरमियान[2] ये दरिया[3],
रोज़-ए-अज़ल[4] से कर रहा हैरान ये दरिया।

दरियादिली[5] है अज़्म[6]-ए-निहाँ[7] दरिया-ए-दिल[8] में
आब-ए-हयात[9] बांटता धनवान ये दरिया।

साहिल[10] से प्रवाहित किये जो नाम किसी के,
दीपों की कतारों पे मेहरबान[11] ये दरिया।

रखता है नज़र[12] साहिलों पर चश्म[13]-ए-गिर्दाब[14],
इंसानी हौसले[15] का इम्तिहान[16] ये दरिया।

करते हैं ग़र्क़ देखिये क्या इसकी धार में ,
संजीदगी[20] से कर रहा एलान[21] ये दरिया।

लौटाया कतरा-कतरा[22] समन्दर के मार्फत[23],
रखता नहीं है अब्र[24] का एहसान[25] ये दरिया।

करता है वुज़ू[26] कोई, लगाता कोई डुबकी,
उन दोनों को है मानता इंसान ये दरिया।

करता है नहीं फ़र्क़ डुबोता है बराबर,
अच्छे से समझता है संविधान ये दरिया।

बहता है धीरे धीरे बनारस के घाट पर,
इस शहर की है शान और पहचान ये दरिया।

मसला नहीं हल होगा ठहर जाने से 'गौतम',
दिखलाता रवानी में समाधान ये दरिया।

---

1 रेगिस्तान और सागर 2 बीच में 3 नदी 4 सृष्टि के प्रारंभ से 5 आते उदारता 6 संकल्प 7 छिपा 8 नदी के हृदय में 9 अमृत-जल 10 किनारा 11 कृपालु 12 दृष्टि 13 आँख 14 भँवर 15 साहस 16 परीक्षा 17 होंठ 18 आस्था 19 डूबा 20 गंभीरता 21 घोषणा

22बूँद-बूँद 23माध्यम 24बादल 25उपकार 26सफ़ाई का इस्लामिक तरीका

वहाँ अब कोई भी खुशख़त नहीं है

वहाँ अब कोई भी खुशख़त[1] नहीं है,
किसी को लिखने की आदत[2] नहीं है।

अभी भी मिलते हैं अहले-मोहब्बत[3],
कोई क़ासिद[4] भी हो हसरत[5] नहीं है।

सिखाने के लिये गूगल गुरू हैं,
पढ़ाने में कोई बरकत[6] नहीं है।

सभी हाकिम हैं जबसे ऑनलाइन,
मातहत[7] को कोई फुर्सत[8] नहीं है।

सभी के पाँव में अब जूतियाँ हैं,
किसी भी पाँव में राहत[9] नहीं है।

पके पत्ते दरख़्तों से गिरे हैं,
हवा की यह कोई कसरत[10] नहीं है।

घने कोहरे की चादर ऐसी पसरी,
कहीं होती कोई हरकत[11] नहीं है।

कोई तक़रीर[12] ना तहरीर[13] कोई,
बहस[14] की एक भी सूरत[15] नहीं है।

सड़क तामीर[16] हो कैसे बतायें,
किसी से कोई भी सहमत नहीं है।

मुझे लौटाया मेरा मान रखकर,
मेरे लायक कोई ख़िदमत[17] नहीं है।

उसी की सोहबत[18] सब चाहते हैं,
जिसे कुछ ख्वाहिश-ए-शोहरत[19] नहीं है।

जहां ना शोर हो तनहाइयों[20] का,
कहीं ऐसी कोई खिलवत[21] नहीं है।

उसे भी फ़िक्र[22] 'गौतम' की रहेगी,
जिसे उससे कोई उल्फ़त[23] नहीं है।

1सुलेखक 2अभ्यास 3प्यार करने वाले 4पत्रवाहक 5इच्छा
6लाभ 7अधीन 8आराम 9आराम 10अपराध 11हिलना-डुलना
12 भाषण 13लेख 14तर्क-वितर्क 15स्थिति 16योजना
17सेवा 18संगत 19ख्याति की लालसा 20एकांत
21जनशून्य स्थान 22 चिंता 23स्नेह

सहर के वक्त चराग़ों को हम बुझाते हैं

सहर[1] के वक्त[2] चराग़ों[3] को हम बुझाते हैं,
कुर्बत-ए-खास[4] भी रुख़सत[5] तो किये जाते हैं।

रुख़-ओ-रफ्तार[6] हवाओं का नापने के लिए,
पतंगबाज[7] ही ऊंची पतंग उड़ाते हैं।

वो सर-ए-आईना[8] जाते नहीं हैं सजधज के,
बला[9] से कौन मुक़ाबिल[10] हो ये समझाते हैं।

जब के चेहरा है इश्तिहार[11]-ए-दिल-ए-अफ़सुर्दा[12],
ज़ख्म-ए-दिल[13] आप ज़माने[14] से क्यों छिपाते हैं।

रदीफ़ो-क़ाफ़िया[15] के मीर-ओ-मुरीद[16] सुनो,
ग़ज़ल शजर[17] पे परिंदे[18] जो गुनगुनाते हैं।

जो छोड़ आया सफ़ीना[19] उलट के साहिल[20] पर,
उसे गिर्दाब-ए-दरिया[21] नहीं बुलाते हैं।

राह आसान उनकी होती है रफ्ता रफ्ता[22],
ठोकरें खाते हैं, गिरते हैं फिर उठ जाते हैं।

अपनी फितरत[23] से वो मजबूर[24] थे, मजबूर रहे,
इक खिलौना वो देके आज भी बहलाते हैं।

जहां सहरा[25] में समन्दर की प्यास हो 'गौतम',
वहाँ चढ़ते हुए दरिया भी उतर जाते हैं।

---

[1]सुबह [2]समय [3]दिये [4]अति-निकटता वाले [5]विदा [6]दिशा और गति
[7]पतंग उड़ाने वाले [8]दर्पण के सामने [9]संकट [10]सामना [11]विज्ञापन
[12]दुखी हृदय [13]हृदय के घाव [14]दुनिया [15]तुक और टेक
[16]नेता और अनुगामी [17]पेड़ [18]पंछी [19]नाव [20]किनारा
[21]नदी का भँवर [22]धीरे-धीरे [23]स्वभाव

[24]लाचार [25]रेगिस्तान

साठ की उम्र खास होती है

साठ की उम्र खास[1] होती है,
थोड़ा बचपन के पास होती है।

ये सफ़र[2] का महज़[3] पड़ाव ही है,
क्यों तबीयत[4] उदास होती है?

दिन की झंझट हो रात की आफत,
फुर्सतों[5] से खलास[6] होती है।

अब मजा लीजिये सठियाने का,
इसकी अपनी सुवास[7] होती है।

जिंदा[8] हैं, जिन्दादिली[9] दिखलायें,
ऊबने से खटास होती है।

खट्टे हो सकते हैं अंगूर, मगर
लिए किसमिस मिठास होती है।

नुक्ता-चीं[10] करना हमारा हक़ है,
पूंजी अनुभव की पास होती है।

अपनी मर्ज़ी से गुनगुनाते हैं,
जब गले में खराश[11] होती है।

तन बबूलों-सा सूख जायेगा,
आत्मा तो पलाश होती है।

खिलखिलाने से बनेगी सेहत[12],
बेहतर[13] सीने में स्वांस होती है।

साठ के बाद बचे कुल चालीस,
किसको ज्यादा की आस होती है।

मौत की फ़िक्र[14] क्यों करे 'गौतम'
ज़िंदगी बदहवास[15] होती है।

---

[1]विशेष [2]यात्रा [3]केवल [4]मन:स्थिति [5]बेकाम/आराम
[6]समाप्त [7]सुगंध [8]जीवित [9]उत्साहित [10]आलोचना
[11]खुजली [12]स्वास्थ्य [13]बहुत अच्छा
[14]चिंता [15]बौखलाना/विकलता

बिना बहस के तय हुआ था चराग़ाँ होगा

बिना बहस[1] के तय हुआ था चराग़ाँ[2] होगा,
मगर ये तय न हो सका कहाँ-कहाँ होगा।

ये रहगुज़र[3] ज़रा आसान सी हो जायेगी,
आप कह दें यहाँ तामीर[4] एक कुआं होगा।

ज़रा सी वजह से जो आँखें भीग जाती हैं,
उन्हीं में जज़्ब[5] कहीं आतिश-ओ-धुआं[6] होगा।

हवाएं खुश्क[7] यहाँ आके सील[8] जाती हैं,
यहाँ पर गर्क[9] कोई दरिया-ए-रवाँ[10] होगा।

बुझा के जो गया फिक्र-ओ-नज़र[11] की कन्दीलें[12],
हवा का झोंका मेरी जां[13] पे मेहरबां[14] होगा।

जो ख़्वाब[15] रातों में आंखों में उतर आता है,
सुबह निकल के वो भटका यहाँ वहाँ होगा।

तेरे सलाम का 'गौतम' नहीं जवाब दिया,
वो तेरे बारे में बेवजह[16] बदगुमां[17] होगा।

---

[1]विवाद [2]दीपोत्सव [3]रास्ता [4]योजना
[5]समाया [6]आग और धुआं [7]सूखा
[8]नमी [9]डूबा [10]बहती नदी
[11]विचारशीलता और अनुभूति
[12]दीप/हंडा [13]जान
[14]कृपालु [15]सपना
[16]अकारण [17]संदेह करना

मुद्दा है ज़ेर-ए-बहस क्यों कुछ लोग हैं ग़मगीन

मुद्दा[1] है ज़ेर-ए-बहस[2] क्यों कुछ लोग हैं ग़मगीन [3],
बांटे गये थे ख्व़ाब[4] बराबर से बेहतरीन[5] ।

अंदाज़-ए-बयान-ए-तकरीर[6] देखिये,
मुट्ठी को भींचने लगे सारे तमाशबीन[7] ।

हैं मुतमईन[8] लोग और हाकिम[9] भी मुतमईन[10],
उम्मीद[11] दे गया है, नजूमी[12] वो नामचीन[13] ।

बेनाम[14] मर गया तो बनी आम-सी[15] ख़बर[16],
एक नाम दे दिया तो बना मामला संगीन[17] ।

टूटे परों के साथ है उड़ने का हौसला[18],
मासूम परिंदे[19] की हो रही है छानबीन।

मैं जानता हूँ लोग उठा लेंगे आसमान,
रखेंगे कहाँ? पाँव के नीचे नहीं ज़मीन।

पानी में फैलते हुए घेरे बता रहे,
पत्थर उछालने यहाँ आते हैं कुछ कमीन[20] ।

आयत[21] को रटके सबने हूबहू[22] सुना दिया,
हैं मौलवी[23] ज़हीन[24] और शागिर्द[25] भी ज़हीन।

मुंसिफ[26] बहुत संजीदा[27] था पढ़ कर बयान[28] फर्द[29],
घूमा था सरे-आम चढ़ा कर वो आस्तीन[30] ।

बातें हक़ीक़ी[31] जबसे समझने लगा 'गौतम'
रखे गये मजाजी[32] मसाइल[33] कई महीन[34] ।

---

[1] मामला [2] विवाद में [3] दुखी [4] सपने [5] उत्कृष्ट [6] भाषण का तरीका
[7] देखने वाले [8] भरोसे में [9] साहेब [10] संतोष में [11] आशा [12] ज्योतिषी

13प्रसिद्ध 14अनाम 15साधारण 16सूचना 17गंभीर 18साहस 19पंछी
20शैतान/उद्दंड 21कुरआन की सबसे छोटी इकाई 22पूरा का पूरा
23इस्लाम का आचार्य 24बुद्धिमान 25शिष्य 26न्यायमूर्ति 27गंभीर
28स्वीकार किया वक्तव्य 29लिखित 30कमीज़/कुरते की बांह
31सांसारिक 32आध्यात्मिक 33विषय 34सूक्ष्म

मौसमे-सैलाब में क्यों धार पतली हो गई

मौसमे-सैलाब[1] में क्यों धार पतली हो गई,
फिर बड़ी मछली का चारा छोटी मछली हो गई।

सर को खुजलाता रहा पहलू[2] बदलकर सारा दिन,
सो गया तो ख्वाबों से आंखों में खुजली हो गयी।

डोर जिसकी उँगलियों में थी बहुत हैरान है,
एक कठपुतली न जाने कैसे पगली हो गई।

पुरअसर[3] मेरी दुआ हो जायेगी मालुम न था,
आँख ने दो बूँद चाही, आँख बदली[4] हो गई।

इतना सीली लकड़ियों ने चूल्हे से छोड़ा धुआँ,
चाँद जैसी रोटी पकते-पकते गंदली हो गई।

बंद पलकों पर सजी थीं खुशनुमा[5] तस्वीरें कुछ,
आँखें जब खोलीं तो हर तस्वीर धुंधली हो गई।

बदल दें सारी रिवायत[6] ये ज़रूरी तो नहीं,
फेंक देना चाहिए सूखी जो गुठली हो गई।

मौसमों की गुलशनों[7] पे जब मेहरबानी[8] हुई,
हमने देखा फूलों पर बेखौफ़[9] तितली हो गई।

दुश्मनों[10] की गालियों की आरज़ू[11] 'गौतम' को है,
दोस्त की तारीफ़[12] नकली[13] और फ़सली[14] हो गई।

---

[1] बाढ़ के दिनों में [2] बगल [3] प्रभावपूर्ण [4] बादल [5] मनभावक
[6] नियम/परिपाटी [7] उद्यान [8] दया [9] अभय [10] शत्रु/विरोधी
[11] कामना [12] बड़ाई [13] झूठी [14] औपचारिकतापूर्ण

पसीने से वो पूरा तरबतर है

पसीने से वो पूरा तरबतर[1] है,
उसे दम[2] लेने दो, लम्बा सफ़र है।

समंदर दे रहा आवाज़ उसको,
बड़ा तन्हा-सा[3] दरिया[4] का सफ़र[5] है।

जो पहले तोलता फिर बोलता है,
उसी पर आज भी ठहरी नज़र है।

सड़क पर भीड़ है पर लोग तन्हा,
हवा-पानी का ये कैसा असर है।

कहीं टिक कर नहीं है वक्त[6] रहता,
तू ले इक नींद कब ठहरी सहर[7] है।

उसे गुमराह[8] कोई क्या करेगा,
तेरी नीयत[9] से बंदा[10] बा-ख़बर[11] है।

हवा के जोर का अंदाज़[12] देता,
ज़मीं[13] पर लेटा वो बूढ़ा शजर[14] है।

मैं ख़ुद में झांकता हूँ, देखता हूँ,
दरो-दीवार[15] में एक दरबदर[16] है।

अभी दी जाएगी तकरीर[17] 'गौतम',
तेरा चुप बैठना ही बेहतर है।

---

1 भींजा हुआ 2 सुस्ताना/साँस लेना 3 अकेला 4 नदी 5 यात्रा 6 समय
7 सुबह 8 गलत समझाना 9 आचरण 10 सेवक/आदमी 11 परिचि
12 परिचय 13 भूमि 14 पेड़ 15 दरवाजा-दीवार (घर) 16 बेघर 17 भाषण

ये ख्याल थोड़ा अजीब है

ये ख्याल[1] थोड़ा अजीब[2] है,
जो मिला है वो ही नसीब[3] है।

ये क़फ़स-ए-पिंजर[4] नातवां[5],
जहां कैद[6] में अंदलीब[7] है।

गये वक्त[8] का एहतराम[9] कर,
गया वख्त सबसे नजीब[10] है।

कहाँ हमसफ़र[11] को हुई ख़बर,
मंज़िल[12] के कौन करीब[13] है।

लिए कासा-ए-दस्ते-दुआ[14],
जो खड़ा है लगता गरीब है।

करें क्या हिसाब[15] गुनाह[16] का,
लेके आया अपनी सलीब[17] है।

मैं था सजदे[18] में कल बे-सबब[19],
मेरी आदत-ओ-तहजीब[20] है।

मुझे बारहा[21] सुलझाइये,
मेरी जीस्त[22] बेतरतीब[23] है।

'गौतम' पे दोस्त हैं मेहरबां[24],
फ़नकार[25] है न अदीब[26] है।

---

1 विचार 2 अनोखा 3 भाग्य 4 हड्डियों के ढाँचे का पिंजरा
5 अशक्त 6 बंदी 7 बुलबुल 8 समय 9 सम्मान 10 शानदार
11 सहयात्री 12 लक्ष्य 13 निकट 14 दुआ के हाथ कटोरे के समान
15 लेखा-जोखा 16 पाप 17 सूली 18 झुका 19 अकारण
20 स्वभाव-संस्कार 21 बार-बार 22 जीवन 23 अव्यवस्थित

24 दयालु 25 कलाकार 26 साहित्यकार

सब कोरोना काल में हैं मुब्तला

सब कोरोना काल में हैं मुब्तला[1],
फासला[2] रखने में है सबका भला।

इल्तिजा[3] क़ातिल[4] ने की मक़्तूल[5] से,
खुद छुरी से रेतिये अपना गला।

इश्क़[6] में हालात[7] बदतर[8] हो गये,
करना है दीदार[9] रखकर फासला।

लैला-मजनू में लड़ाई हो गई,
सबके घर में अब यही है मामला[10]।

घर से ना निकला करें अब बे-नक़ाब[11],
वर्दीवाला[12] हो ना जाये बावला[13]।

वायरस को मारने के वास्ते,
धूप में हमने किया रंग साँवला।

आप इतने में ही घबराने लगे,
ज्यादा लम्बा जायेगा ये सिलसिला।

एक सिक्के के हैं दो पहलू जुदा[14],
एक ऊबा घर में, दूजा घर चला।

माना मोदी[15] है तो मुमकिन है, मगर
आप भी रखें बचाकर हौसला[16]।

हाल 'गौतम' का बतायेंगे अगर,
आपकी आँखें ना जायें छलछला।

---

[1]फँसा हुआ [2]दुरी [3]प्रार्थना [4]खूनी [5]वध किया जाने वाला
[6]प्यार [7]परिस्थिति [8]अति खराब [9]दर्शन/मिलना

[10] स्थिति [11] बेघूँघट [12] पुलिस [13] पागल/कुपित
[14] अलग-अलग [15] प्रधानमंत्री श्री मोदी
[16] मनोबल

था किया तस्लीम हमने फ़ैसला

था किया तस्लीम[1] हमने फ़ैसला[2],
अपने साये से बढ़ाया फासला[3] ।

आंधियों की पेड़ों से बनती नहीं,
और गिरता है बया का घोसला।

बच्चे अपने बाप को समझा रहे,
ले लिया स्कूल में है दाखिला।

पंख जब टूटा उठा लेता हूँ मैं,
जागने लगता है मेरा हौसला[4] ।

जब तलक आबे-रवां[5] है ज़िंदगी,
तब तलक चलता रहेगा काफिला[6] ।

घर के ज़ानिब[7] जा रहे बदहाल[8] को,
रोकिये मत, जायेगा वो तिलमिला।

उन दरख़्तों[9] के नहीं साये मुफीद[10],
जिनको दीमक कर गई है खोखला।

मुझको नावाकिफ[11] लगा हालात से,
गीत गाता घूमता एक बावला।

लेते ही आलाप जिद करने लगा,
तालियों की ताल में हो कहरवा[12] ।

बेवजह[13] खारिज[14] हुआ 'गौतम' वहाँ,
वो नहीं था तोतला[15] ना दोगला[16] ।

---

[1]स्वीकार्य [2]निर्णय [3]दूरी [4]साहस [5]बहते पानी के समान [6]यात्रा समूह
[7]ओर [8]बुरा हाल [9]पेड़ [10]लाभकारी (सुरक्षित) [11]जानकारी रहित

[12]*आठ मात्रा की भारतीय ताल* [13]*अकारण* [14] *रद्द*
[15]*झिझकने वाला* [16]*अविश्वसनीय*

किसी की मेहर से तक़दीर संवरने से रही

किसी की मेहर[1] से तक़दीर[2] संवरने से रही,
वक्त[3] के साथ हर तस्वीर[4] बदलने से रही।

आप भी चाहें तो सौ हिकमतें[5] कर सकते हैं,
फांस सीने में है पैवस्त[6] निकलने से रही।

चाहते हैं तो कोई और तरीका सोचें,
यूँ सिरा ढूंढने से गांठ सुलझने से रही।

रंग करने से इमारत ये चमक जायेगी,
नींव की एक भी दरार तो भरने से रही।

रुख़ हवाओं का बदलने से उभर जाती है,
टीस उन चोटों की मलहम से बहलने से रही।

इसको गुलदान[7] में पहले ही सजा लेना था,
एक पामाल[8] कली जूड़े में सजने से रही।

बदज़ुबानी[9] भी बुरी और बेज़ुबानी[10] भी,
जिसको आदत बनाओगे वो सुधरने से रही।

हमने जाना है रगड़ कर हथेलियाँ दोनों,
इतनी गर्मी से जमी बर्फ पिघलने से रही।

बंद उसने करी आँखें तो चलो अच्छा किया,
उसकी आँखों में कोई बात खटकने से रही।

एक चिंगारी के सिर ठीकरा[11] क्यों फोड़ दिया,
इन हवाओं के बिना आग भड़कने से रही।

पाँव के छालों का क्यों बारहा[12] हिसाब[13] किया,
तेरे हिसाब[14] से यह राह तो चलने से रही।

किसी थपकी की जरूरत नहीं उसको 'गौतम',
ख़्वाब[15] कुछ साथ हैं, अब नींद उचटने से रही।

---

1 कृपा/दया 2 भाग्य 3 समय 4 परिस्थिति 5 कोशिश/तरकीब 6 गहरी घुसी
7 फूल सजाने का पात्र 8 पाँव से कुचला/कुचली 9 गंदी बात बोलना
10 ना बोलना 11 उत्तरदायी बताना 12 बार-बार
13 लेखा-जोखा 14 ढंग 15 सपना

अच्छे दिन आने वाले हैं

अच्छे दिन आने वाले हैं,
सबको भरमाने वाले हैं।

पत्रकार सब लेकर फुकनी[1],
मुद्दे[2] गरमाने वाले हैं।

अंगडाई वो तोड़ेंगे, बस
उंगली चटकाने वाले हैं।

बहरे कान साफ कर बैठे,
गूंगे फ़रमाने [3] वाले हैं।

सांसद नये सत्र में कोई
गुत्थी[4] सुलझाने वाले हैं।

इतने कठिन सवाल न पूछें,
हाकिम[5] झल्लाने वाले हैं।

गला हो गया है तर[6] जिनका,
अब वो चिल्लाने वाले हैं।

संजीदा[7] होकर बैठे हैं,
बस सिर खुजलाने वाले हैं।

पानी गुलदानों[8] का बदलो,
ये गुल कुम्हलाने वाले हैं।

बातें मीठी-मीठी कर के,
अब सब गुर्राने वाले हैं।

चुप हो जाओ अहले-मकतब[9],
आयत[10] समझाने वाले हैं।

नया मदारी[11], नया जमूरा[12],
करतब[13] दोहराने वाले हैं।

'गौतम' देखो अहले-महफिल[14],
कुछ-कुछ बौराने[15] वाले हैं।

1चूल्हा फूंकने की नलिका 2मामले 3बोलने वाले
4समस्या 5साहेब 6तृप्त 7गंभीर 8 फूल सजाने का पात्र
9स्कूल वाले (पढ़ाने वाले) 10कुरआन की सबसे छोटी इकाई
11तमाशा करने वाला 12मदारी का सहायक
13खेल/तमाशा 14सभा वाले 15पगलाना

करते थे बयाँ जैसे

करते थे बयाँ[1] जैसे,
हालात[2] कहाँ वैसे!!

खाने को नहीं दाने,
पीने को मांगें पैसे!!

वो पालतू सुआ[3] था,
पिंजरे से उड़ा कैसे?

उस हादसे[4] को छोड़ो,
फैली ये ख़बर[5] कैसे?

मज़मा[6] तो बेवजह[7] था,
जलसे[8] में बदला कैसे?

कुछ ख़्वाब[9] पालते तो,
रातों में सोते कैसे?

हाकिम[10] बहुत खफ़ा[11] है,
पूछे सवाल कैसे?

जाना था धूप में तो,
साये में रुके कैसे?

जो बे-हया[12] नहीं है,
बेबाक़[13] होगा कैसे?

सौ बात पर बताओ,
चुप भारी पड़ी कैसे?

कुछ भी नहीं जला तो,
हर सिम्त[14] धुआं कैसे?

तुम भी वहाँ थे 'गौतम'
बेदाग[15] रहे कैसे?

---

[1]बताना [2]परिस्थितियां [3]तोता
[4]दुर्घटना [5]सूचना [6]भीड़ [7]अकारण
[8]सभा [9]सपना [10]साहेब [11]कुपित
[12]निर्लज्ज [13]स्पष्ट बोलना
[14]ओर [15]स्वच्छ छवि

बांचने को कोई किताब नहीं

बांचने को कोई किताब नहीं,
एक चेहरा भी बे-नक़ाब[1] नहीं।

सौ सवालों का इक जवाब सुनो,
कोई अब होता लाजवाब[2] नहीं।

बेज़ुबानों[3] की राय भी ले लो,
वे सियासी[4] न हों ईज़ाब[5] नहीं।

सदरे-महफिल[6] ने फिर से समझाया,
क्यों ज़रूरी[7] था इंतखाब[8] नहीं।

अपनी रुसवाइयों[9] से डरते हो?
सबसे कहते हो क्यों आदाब[10] नहीं?

है नया ढब[11] रसूखदारों[12] का,
सजदे[13] में भी हैं बे-रुआब[14] नहीं।

माह-ए-रमजान[15] साल भर होता,
भूख-का रखते हम हिसाब नहीं।

चारागर[16], रोटियां देकर देखो,
भूख-की है दवा जुलाब[17] नहीं।

बंद मुट्ठी को खोल दो अपनी,
कैद[18] इनमें है इन्क़लाब[19] नहीं।

फिक्र[20] में दुबले हो रहे थे जो,
ढूंढने पर मिले जनाब[21] नहीं।

उसको भी वक्त[22] ने बदल डाला,
उसके बालों में है गुलाब नहीं।

अपनी हस्ती से रहे जो गाफ़िल[23],
करते वो जिक्र-ए-हुबाब[24] नहीं।

डूबने के लिये समंदर है,
हसीन आँखों में गिर्दाब[25] नहीं।

कैद हैं लोग घरों में 'गौतम',
वैसे हालात हैं खराब नहीं।

1बे-घूँघट 2निरुत्तर 3खामोश 4राजनैतिक 5आवश्यक
6सभा का मुखिया (सभापति) 7आवश्यक 8चुनाव 9चुगली
10नमस्कार 11ढंग 12पहुँचवाले 13विनम्रता 14अकड़ रहित
15रमजान का महीना 16चिकित्सक 17दस्त की दवा
18बंदी 19क्रांति 20चिंता 21श्रीमान 22समय
23अज्ञानी 24बुलबुले की चर्चा 25भँवर

हाथों में कोई संग या तलवार नहीं है

हाथों में कोई संग[1] या तलवार नहीं है,
वह आदमी इस दौर का किरदार[2] नहीं है।

चादर थकन की ओढ़ के सोया है बेख़बर,
स्वप्नों से उसका कोई सरोकार नहीं है।

पांवों तले ज़मीन है सर पर है आसमान,
कुछ फ़र्क़ नहीं गर दर-ओ-दीवार नहीं है।

चलते हुए क़दमों की है मोहताज[3] रहगुज़र,
क़दमों से तेज इसकी तो रफ़्तार नहीं है।

हर रंग के गुल हो रहे गुलशन में नमूदार,
लेकिन फ़िज़ा[4] वहाँ की खुशगवार[5] नहीं है।

जद्दोजहद[6] की हद है ये जीने के वास्ते,
दैर-ओ-हरम[7] का कोई तलबगार[8] नहीं है।

अब तिश्नगी[9] ही जिसका मुकद्दर बने 'गौतम',
साक़ी के रहम-ओ-करम का हक़दार नहीं है।

---

1 पत्थर 2 चरित्र 3 निर्भर 4 माहौल/वातावरण
5 सुखद 6 भाग-दौड़ 7 मंदिर और मस्जिद
8 माँगने/पूछने वाला 9 प्यास/तृष्णा

हम गिला करते किस तरीक़े से

हम गिला करते किस तरीक़े से,
हमसे मिलते हैं वो सलीक़े[1] से।

दर्द-ए-दिल जब बयाँ नहीं होगा,
चारागर[2] समझे किस तरीक़े से?

एक चुप बात कह रही सौ-सौ,
बात अब हो तो किस तरीक़े से?

उससे नज़रें मिला नहीं पाये,
उसने देखा था बा-सलीक़े[3] से।

एक बुत[4] ने है बुत-परस्त[5] कहा,
ढंग उसके थे आदमी-के से।

आस्माँ नापने की हसरत है,
पंख नाज़ुक मेरे तितली-के से।

लब-ए-साहिल पे बैठ जाने से,
पार उतरेंगे किस दकीके[6] से।

बद्ज़ुबाँ हो नहीं पाया 'गौतम',
आदमी है, रहा सलीके से।

---

1 शिष्टता 2 चिकित्सक 3 शिष्टता के साथ
4 मूर्ति 5 मूर्ति-पूजक 6 युक्ति

डमरू लेकर गया मदारी, मगर जमूरे नाच रहे

डमरू लेकर गया मदारी, मगर जमूरे[1] नाच रहे,
बहरे कान लगाकर सुनते, गूंगे ख़बरें बाँच रहे।

जो क़तार में ठिठुर रहे हैं सर्दी में, उनकी ख़ातिर,
आग मसीहा[2] लगा रहे हैं, ताकि मिलती आँच रहे।

पेट पीठ से सटे हुए हैं जिनके, वह कैसे ख़ुश हैं?
फ़िक्र जिन्हें हैरत से ज्यादा वो स्थिति को जाँच रहे।

बहुत ज़रूरी एहतियात है चेहरे पर एक चेहरा हो,
पर्दे नाकाफी होते हैं जब खिड़की में कांच रहे।

दुनिया एक अजायबघर है, सबकी अपनी चाल यहाँ,
रेंग-रेंग कर चलते हैं कुछ, कोई सहज कुलाँच रहे।

लोग छुपा कर ख़ंजर रखते हैं अपनी आस्तीनों में,
हाथ मिलाओ, गले लगाओ, लेकिन थोड़ी खाँच[3] रहे।

सच उसको माना जायेगा जो है फ़र्द[4] बयानों में,
इन्हीं बयानों में चाहे कुल सिर्फ सिफ़र[5] भर सांच रहे।

हंगामा होने दो पहले फिर 'गौतम' मानोगे तुम,
नौ-दो-ग्यारह हो जायेंगे करते जो तीन-पांच रहे।

---

[1]मदारी का सहायक [2]उद्धारकर्ता [3]दो वस्तुओं के बीच का जोड़
[4]लिखा गया [5]शून्य

उलझे-उलझे से ख़यालात से घिर जाता हूँ

उलझे-उलझे से ख़यालात[1] से घिर जाता हूँ,
ख़ुद को जितना समेटता हूँ बिखर जाता हूँ।

चुप लगाता हूँ तो दुनिया सवाल करती है,
बात करता हूँ तो आँखों से उतर जाता हूँ।

सुबह-दम छोड़ के जिसको मुझे जाना होगा,
दिन ढले लौट कर मैं फिर उसी घर जाता हूँ।

कोई हसरत, कोई उम्मीद, आरज़ू कोई,
रास्ता रोके तो कतरा के गुज़र जाता हूँ।

लब-ए-साहिल-सी[2] पुर-सुकून[3] है तनहाई[4] मेरी,
दरिया-ए-माज़ी[5] में जब चाहूँ उतर जाता हूँ।

अपनी मंज़िल के बहुत पास आ गया हूँ मैं,
सफ़र तमाम हो रहा है तो डर जाता हूँ।

कल तलक लगता था सब से है मुख़्तलिफ़[6] 'गौतम',
अहल-ए-दुनिया[7] की तरह मैं भी नज़र आता हूँ।

---

[1]विचार [2]किनारे का नदी से सटा भाग [3]शांतिमय [4]अकेलापन
[5]बीते कल की नदी [6]भिन्न [7]दुनिया के लोग

ये आरज़ू थी कोई क़ाबिल-ए-तारीफ़ मिले

ये आरज़ू थी कोई क़ाबिल-ए-तारीफ़[1] मिले,
कभी किसी से हमे राहत-ए-लतीफ़[2] मिले।

ज़बान[3] फ़र्क़[4] थी, अंदाज़-ए-गुफ़्तगू[5] था जुदा[6]
लगे थे लोग जो संजीदा[7] पुर-ज़रीफ़[8] मिले।

गिला किया कभी हमसे तो मुकर्रर[9] बोला,
मैं चाहता नहीं था वो मुझे सफीफ[10] मिले।

बस इतनी बात पे क़ातिल ने रख दिया ख़ंजर,
क्यों उसके काम पर मक़्तूल[11] को तारीफ़ मिले।

मिले हैं जब भी किसी से, मिले सलीक़े[12] से,
रही ये फ़िक्र किसी को नहीं तक़लीफ़ मिले।

कल उसकी बज़्म में ये फ़ैसला हुआ 'गौतम',
मिलेंगी तालियाँ गर काफ़िया-रदीफ़[13] मिले।

---

[1]प्रशंसा योग्य [2]प्रसन्नता का अवसर [3]बोली
[4]भिन्न [5]बात करने का ढंग [6]अलग [7]गंभीर
[8]परिहास प्रिय [9]फिर से [10]लज्जित
[11]क़त्ल होने वाला [12]शिष्टता
[13]शिल्प और सौंदर्य (ग़ज़ल का)

तहसीन-तलब लोगों से पंगा नहीं लेते

तहसीन[1]-तलब लोगों से पंगा नहीं लेते,
सर पर कभी इल्ज़ाम-ए-दंगा नहीं लेते।

दैर-ओ-हरम[2] से बच के निकल जाते हैं जनाब,
बिजली का तार हाथ में नंगा नहीं लेते।

दामन-दिल-ओ-दिमाग़ मेरा पाक-साफ़ है,
हम जाके कभी डुबकी-ए-गंगा नहीं लेते।

इक़बाल[3] ज़माने में उसी का बुलंद है,
हाकिम से मेल रखते हैं, पंगा नहीं लेते।

उड़ने का हौसला जो पालते हैं दिलों में,
पिंजरे में पालने को परिंदा नहीं लेते।

रखते हैं हम भी अज़्म-ए-मंज़िल[4] का हौसला,
चलने के वास्ते कभी कंधा नहीं लेते।

जो चाहते हैं बचना बद-नज़र से, वो कभी
मुँह पर नक़ाब रंग-बिरंगा नहीं लेते।

हालात-ए-मुल्क[5] उसने बताया हमे 'गौतम'
जो अपने हाथ में हैं तिरंगा नहीं लेते।

---

[1]प्रशंसा [2]मंदिर और मस्जिद [3]सौभाग्य
[4]मंजिल के लिये प्रतिबद्ध [5]देश का हाल

सुबह-दम फिर से ज़िंदगी को शूरू करता हूँ

सुबह-दम[1] फिर से ज़िंदगी को शूरू करता हूँ,
नसीब-ए-ख़स्ता[2] पे हँसता हूँ, रफ़ू[3] करता हूँ।

अपनी सूरत से खुशफहम[4]-ओ-मुतमइन[5] नहीं,
अपनी सूरत को आईने में अदू[6] करता हूँ।

ज़िक्र करता रहे उसका ही हर घड़ी कोई,
मैं रक़ीबों[7] के साथ दौर-ए-सुबू[8] करता हूँ।

बिना उम्मीद-ए-दीदार के उसकी गलियाँ,
पाँव के छालों से आलूदा-लहू[9] करता हूँ।

भिगोता अपना पैरहन[10] हूँ मैं पसीने से,
हसीं ख़यालों से यूँ खुद को बे-बू[11] करता हूँ।

मैं रोटियों के लिए जाता नहीं लंगर पे,
कभी पसीना कभी सर्फ़-ए-लहू[12] करता हूँ।

मैं किसके पास अपनी क़ैफ़ियत[13] देने जाता,
मुझे ख़बर नहीं जो करता हूँ क्यूँ करता हूँ।

हद-ए-दीवानगी इसको ही कहेंगे "गौतम"
नमाज़ पढ़ता नहीं, रोज़ वुज़ू[14] करता हूँ।

---

[1] बहुत सुबह [2] दुर्दशाग्रस्त भाग्य [3] तागा भरना [4] खुशी का भ्रम
[5] संतुष्ट [6] शत्रु [7] प्रतिद्वंदी [8] साथ में शराब पीना [9] रक्त रंजित
[10] वस्त्र [11] महक रहित (प्रभाव मुक्त) [12] रक्त देकर [13] सफाई
[14] नमाज़ पूर्व हाथ-मुँह धोने का क्रिया

हमें एहसास-ए-फ़ानी का दर्द होता है

हमें एहसास-ए-फ़ानी[1] का दर्द होता है,
हमारे सामने जब पत्ता ज़र्द[2] होता है।

मुझे हैरत-ज़दा[3] करता है आदमी का लहू,
कभी यह गर्म कभी कितना सर्द होता है।

सवार होके बादगर्द[4] पे छूता है फलक,
उठा जो गर्द से वापस वो गर्द होता है।

उसको हालात से कोई भी गिला क्यों होगा,
दौर-ए-तनहाई[5] में जो खुद-नबर्द[6] होता है।

जवाब कोई लाजवाब करेगा कैसे,
सवाल रोज़ नया इर्द-गिर्द[7] होता है।

चलते रहने के लिये करता है आगाह मुझे,
साथ में मेरे कोई रह-नवर्द[8] होता है।

जब दिखाता है वो सूरत सही दिखाता है,
अगरचे आईना भी पस-ए-गर्द[9] होता है।

उसे बे-फ़िक्र नींद आयेगी कैसे 'गौतम',
जिसे ये फ़िक्र है क्या बाद-ए-मर्ग[10] होता है।

---

[1] नश्वरता का विचार [2] पीला [3] आश्चर्यचकित [4] बवंडर
[5] एकांत में [6] स्वयं से संघर्ष रत [7]आस-पास [8] घुमंतू
[9] धूल के पीछे (धूल धूसरित) [10] मृत्यु के बाद

मायावी दुनिया में अक्सर जादू-टोना हो जाता है

मायावी दुनिया में अक्सर जादू-टोना हो जाता है,
कद्दावर[1] दिखने वाला एक पल में बौना हो जाता है।

सागर के खारेपन में ही है पहचान निहित उसकी,
पानी की एक बूँद बराबर अश्रु अलोना[2] हो जाता है।

पिंजर[3] एक कफस[4] है जिसमें जान कैद है आदम की,
घर है नया कफस, बाहर जो गया कोरोना हो जाता है।

आता था फन जिसे नचाने का उंगली पर लोगों को,
एक दिन ऐसा भी आता है वही खिलौना हो जाता है।

जीवन की ऊबड़-खाबड़ राहों को चौरस करने में,
हमने तो देखा है खुद आदमी तिकोना हो जाता है।

जीवन सरिता का प्रवाह है तेज और निष्ठुर लेकिन,
घिस-घिस कर कंकड़ भी शालीग्राम-सलोना हो जाता है।

अहंकार साहूकारी का करता नहीं कभी 'गौतम'
माल सवाया करने जब बैठा खुद पौना[5] हो जाता है।

---

[1]ऊँचे कद वाला [2]बिना नमक का [3]शरीर के अंदर हड्डियों का ढाँचा
[4]पिंजरा [5]तीन चौथाई

सत्र हंगामा-ख़ेज़ हो, ये ज़रूरी तो नहीं

सत्र हंगामा-ख़ेज़[1] हो, ये ज़रूरी तो नहीं,
हुज्जत-ओ-बहस[2] रोज़ हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

सबके सिर पर हो बोझ ये तो बात दीगर[3] है,
सबके सीने पे बोझ हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

सबको है बोलने का हक़, लिखा आईन[4] में है,
सुनना सू-ए-गुरेज़[5] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

ये बड़ी बात है प्याला है सबके हाथों में,
प्याला हर बादा-रेज़[6] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

ख़्वाब जो रात में आंखों में उतर आता है,
वो हक़ीक़त-फरोज़[7] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

सोने के वास्ते इक रात ज़रूरी होगी,
चाँद जल्वा-अफ़रोज़[8] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

बात सीधी भी मुतासिर[9] करेगी 'गौतम' को,
बात हैरत-अंगेज़[10] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

---

[1]हंगामेदार/शोरगुल वाला [2]ज़बानी झगड़ा / विवाद [3]अलग
[4]कानून (संविधान) [5]सुनने से परहेज [6]शराब से भरा हुआ
[7]सत्य उजागर करने वाला [8]रौशन करने वाला
[9]प्रभावित [10]आश्चर्य से भरपूर

आईना सच ही सच दिखाता है

आईना सच ही सच दिखाता है,
अक्स[1] वो हू-ब-हू बनाता है।

जितने टुकड़े किये गये उसके,
उतने टुकड़ों से वो दोहराता है।

उसके आईन[2] में इतनी है कमी,
दांया को बांया वो दिखलाता है।

बेमुरव्वत[3] या बेलिहाज़[4] कहो,
आईना, आईना दिखाता है।

सर-ए-आईना[5] हो कोई सूरत,
न बहलता है ना बहलाता है।

लेने वाले का ये सगा न हुआ,
यूँ तो बाज़ार में बिक जाता है।

धूल को पोछ कर देखा हमने,
सिर्फ आईना निखर जाता है।

बेज़बाँ, इतना बेज़बाँ भी नहीं,
सूरत-ए-हाल ये बताता है।

आदमी ये नहीं, गर बाल[6] आया,
आईना कौड़ी का हो जाता है।

इसकी सीरत[7] तेरी जैसी 'गौतम'
देखता है जो वो दिखाता है।

---

[1]प्रतिबिम्ब [2]कानून/विधान [3]संकोचरहित
[4]निर्लज्ज [5]दर्पण के समक्ष [6]चटकना [7]स्वभाव

संग बे-ख़द-ओ-ख़ाल होता है

संग[1] बे-ख़द-ओ-ख़ाल[2] होता है,
बुत बने तो बवाल होता है।

कोई हैरत-ज़दा[3] नहीं होता,
जब कोई गोलमाल होता है।

कोई उम्मीद-ए-जवाब नहीं,
पास लेकिन सवाल होता है।

वास्ता कब पड़ा तनहाई से,
साथ उसका ख़याल होता है।

सर झुका कर निकलने वालों से,
अब नहीं बोलचाल होता है।

बारहा[4] जो उम्मीद देता है,
वादा वो बा-कमाल[5] होता है।

देखना है मेरे रक़ीबों[6] में,
कौन मुंसिफ़[7] बहाल होता है।

चारागर[8] से नहीं बता पाये,
दर्द तो बहर-हाल [9] होता है।

उसका अपना नसीब है 'गौतम',
दिल अगर पाएमाल[10] होता है।

---

[1]पत्थर [2]आकृति विहीन [3]आश्चर्यचकित [4]बार-बार
[5]कमाल से भरा [6]विरोधियों में [7]न्यायकर्ता [8]चिकित्सक
[9]हर समय [10]पाँव द्वारा कुचलना

जो नहीं पढ़ता कभी हाथ की लकीरों को

जो नहीं पढ़ता कभी हाथ की लकीरों को,
उसको देखा है नहीं कोसते तक़दीरों को।

दुआएं जिनकी थीं मोहताज-ए-ख़ैरात[1] नहीं,
दर-ओ-दीवार[2] खोजते हैं उन फ़क़ीरों को।

साथ तारीख़[3] के कल दिन भी बदल जायेगा,
दर्ज़ कर लें ज़ेहन[4] में आज की तस्वीरों को।

कितनी कठिनाइयाँ आसान हो गयी होतीं,
आज़माते अगर बुज़ुर्गों की तदबीरों[5] को।

कुछ परिंदे क़फ़स[6] को घोंसला समझते हैं,
कोई समझा नहीं सकता है इन असीरों[7] को।

फ़र्क़ तहक़ीर[8]-ओ-तौक़ीर[9] में कर पाते नहीं,
बारहा करते हैं सलाम जो वज़ीरों को।

ठोस बुनियाद नहीं ख़्वाबों की कोई 'गौतम'
फिर भी पलकों पे उठाये रहे शहतीरों[10] को।

---

[1]भिक्षा की विवशता [2]दरवाजा-दीवारें (घर) [3]तिथि
[4]दिमाग [5]उपाय [6]पिंजरा [7]बंदियों को [8]अपमान [9]सम्मान
[10]छत में लगाने का बड़ा और लंबा लट्ठा

फ़ैसला लिख लिया और बाद में सुनवाई की

फ़ैसला लिख लिया और बाद में सुनवाई की,
मेरे मुंसिफ[1] को ज़रूरत नहीं सफ़ाई की।

सामने हैं मेरे कुछ मुद्दे हिमालय जैसे,
हम समंदर से करें बात कब गहराई की।

मिल के नासेह[2] से आया है बादाखाने[3] में,
जाम लेते ही करी बात पारसाई[4] की।

कान में तेल डाल कर ही वो आया होगा,
आज हर बात पर है हौसला-अफ़ज़ाई[5] की।

है गिला[6] जिनको ज़माने से जिये जाते हैं,
ज़िंदगी सबको मिली है किसी सौदाई[7] की।

मौत का दिन है मुअय्यन[8] कहा था 'ग़ालिब' ने,
ज़िंदगी से नहीं उम्मीद बेवफ़ाई की।

दर्द-ए-दिल उनको सुनायें तो सुनायें कैसे,
बात वो करते हैं बढ़ती हुई महंगाई की।

हमको दीवाना नहीं उसने कहा है क़ाफ़िर[9],
बुतपरस्ती[10] भी करी तो बुत-ए-हरजाई[11] की।

दोस्त चुप रहने की देते हैं नसीहत[12] 'गौतम'
बात समझायें किसे अक़्ल-ओ-दानाई[13] की।

---

[1]न्यायमूर्ति [2]उपदेशक [3]शराबखाना [4]सदाचार [5]प्रोत्साहन
[6]शिकायत [7]पागल [8]नियत [9]इस्लाम को ना मानने वाला
[10]मूर्तिपूजा [11]बेवफा बुत [12]सुझाव [13]मति और विवेक

लोग सुनना चाहते थे कल दिल-ए-बर्बाद की

लोग सुनना चाहते थे कल दिल-ए-बर्बाद[1] की,
हम ग़ज़ल कैसे सुनाते ख़ाना-ए-बर्बाद[2] की।

माथापच्ची हो रही थी गुंबद-ओ-मीनार पर,
कोई गुंजाइश नहीं थी चर्चा-ए-बुनियाद की।

सीधी-साधी बातें दिल को अब नहीं छू पायेंगी,
उलझी बातें जब मुतासिर[3] कर गयीं उस्ताद की।

हम ख़बर बन कर रहेंगे चर्चा में दो-चार दिन,
देर तक यादें नहीं रहतीं किसी उफ़्ताद[4] की।

दिल बदलते, दल बदलते हैं वो जैसे पैरहन[5],
जो हमे समझा रहे थे कुफ़्र-ओ-इल्हाद[6] की।

सिलसिला-ए-बहस से उम्मीद कोई क्या करे,
जब विवादों में उलझना है नीयत संवाद की।

ज़िक्र-ए-गौतम किसी महफ़िल में अब होगा नहीं,
दोस्ती करता नहीं कोई कभी नक़्क़ाद[7] की।

---

[1]प्यार में बर्बाद दिल [2]बर्बाद घर (मुल्क) [3]प्रभावित
[4]हादसा [5]वस्त्र [6]नास्तिकता [7]आलोचक

बैठे हैं साथ मुफ़लिस-ओ-नवाब-ओ-नजीब

बैठे हैं साथ मुफ़लिस[1]-ओ-नवाब[2]-ओ-नजीब[3],
साक़ी दिखा रहा था हमे जलवा-ए-तहज़ीब[4] ।

मयख़्वारों[5] की सोहबत[6] की बदौलत[7] हूँ जानता,
दो घूंट बदल सकते हैं अंदाज़[8]-ए-तहज़ीब ।

बैठे हैं जो करने को दो आलम[9] का सियापा[10],
कुछ देर में जाते हैं सू-ए-आलम-ए-अजीब[11] ।

मानें ना-मानें साफ़ गला होता है मय से,
देखा है बेज़ुबान को बन जाते अंदलीब[12] ।

सच को निकालने की सिफ़त[13] मय के पास है,
गो[14] सचबयानी होती है अजीब-ओ-ग़रीब[15] ।

महफ़िल मे हमको बारहा[16] समझाया गया है,
लिखने को दिल-फ़रेब[17] ग़ज़ल पीते हैं अदीब[18] ।

लेता नहीं मय दर्द भुलाने के वास्ते,
महसूस किया जिसने कभी दर्द-ए-ग़रीब[19] ।

पौव्वा से काम होगा या अद्धा मंगाऊँ मैं,
तू नाप दे तेरे लिये मँगवा दूँ मैं सलीब[20] ।

तनहाई में अब माज़ी[21] को साक़ी बनाइये,
जो दूर हैं उनको ही बुला लीजिये क़रीब ।

हम मानते हैं हम भी बादाख़्वार[22] थे 'गौतम',
हमने मगर पिया नहीं है ख़ून-ए-ग़रीब[23] ।

---

[1]निर्धन [2]रईस [3]प्रतिष्ठित [4]शिष्टताका प्रदर्शन [5]शराबी [6]संगत [7]फलस्वरूप

[8]हाव भाव [9]लोक-परलोक [10]मातम/रोना [11]अजब (वैचारिक) दुनिया की ओर
[12]बुलबुल [13]विशेष गुण [14]यद्यपि [15]आश्चर्यजनक [16]बारबार [17]मन को छूना
[18]साहित्यकार (लेखक/कवि) [19]किसी निर्धन की पीड़ा [20]सूली
[21]बीता हुआ कल/भूत काल [22]शराबी [23]निर्धन का खून

सूद के साथ मैंने मूल भी चुकाया है

सूद के साथ मैंने मूल भी चुकाया है,
ज़िंदगी बोल तेरा और क्या बक़ाया[1] है।

चंद यादें ज़ेहन में, चंद हसरतें दिल में,
पास में सिर्फ बचा इतना ही सरमाया[2] है।

नींद के वास्ते जब ओढ़ी मौन की चादर,
फिर किसी ख़्वाब ने आकर मुझे जगाया है।

आजकल गाहे-बगाहे[3] ये गुमाँ होता है,
कोई है जिसने मुझे नाम से बुलाया है।

रख के देखा दिल-ओ-दिमाग़ जुदा पलड़ों पे,
कभी मीज़ान[4] बराबर नहीं हो पाया है।

जब थी बीनाई[5], ठहरती नहीं थी एक जगह,
गई बीनाई तो सब साफ नज़र आया है।

है ख़ुदा[6] की ये ख़ुदाई[7] चली मर्ज़ी किसकी,
अपनी मर्ज़ी से गया कौन, कौन आया है।

कल अनल-हक़[8] की बात बोल रहा था 'गौतम',
सू-ए-हक़[9] जाते हुए वो भी लड़खड़ाया है।

---

[1]शेष [2]पूंजी [3] कभी-कभी [4]तराजू [5]दृष्टि [6]रब/ईश्वर [7]दुनिया
[8] मैं सत्य हूँ, मैं ख़ुदा हूँ [9]सत्य की ओर

इल्तिजा है नया संवाद करो

इल्तिजा है नया संवाद करो,
थक गये होगे फिर विवाद करो।

एक मुद्दत हुई रुलाया नहीं,
आँसुओं को मेरे आज़ाद करो।

ख़्वाब देते हैं तसल्ली माना,
वक़्त ख़्वाबों में न बर्बाद करो।

मान लेता हूँ ना-मुराद[1] हूँ मैं
आओ, समझाओ, बे-मुराद[2] करो।

हाल-ए-दिल पूछ लो आकर मेरा,
दूसरा काम इसके बाद करो।

बुत-परस्ती[3] तो नहीं छोड़ेंगे,
बुत-ए-ज़ेबा[4] चलो जिहाद[5] करो।

हमको थोड़ी तो तसल्ली होगी,
बेमुरव्वत[6] बनो इफ़साद[7] करो।

वक्त-ए-रुख़्सत[8] गिला[9] नहीं करते,
वक्त-ए-रुख़्सत को न बेस्वाद[10] करो।

उससे मसरूफ़ियत[11] का फन[12] सीखा,
बारहा कुछ गढ़ो, बर्बाद करो।

दर्द होता न हो जिसको, या रब
ऐसा आदम कोई ईज़ाद[13] करो।

न सिकन्दर[14] हूँ, न कलंदर[15] हूँ,
मेरा अफ़साना[16] क्यों रूदाद[17] करो?

हम रकीबों[18] से गए-गुज़रे नहीं,
कभी हमसे भी इत्तिहाद[19] करो।

ज़िंदगानी[20] का फल्सफ़ा[21] समझो,
थोड़ा भूलो भी थोड़ा याद करो।

आज फुर्सत से है बैठा 'गौतम',
दोस्त! फुर्सत हो तो बर्बाद करो।

---

1 अभागा 2 इच्छा मुक्त 3 मूर्तिपूजा 4 सुंदर मूर्ति (प्रेयसी) 5 संघर्ष करना
6 संकोच रहित 7 शरारत 8 मरते समय 9 शिकायत 10 बेमज़ा 11 व्यस्तता
12 कौशल 13 आविष्कार 14 प्रसिद्ध यूनानी सम्राट (Alexander) 15 सूफी/संत
16 कहानी 17 दस्तावेज़ (Minutes) 18 प्रतिद्वंदी 19 मेल 20 जीवन 21 दर्शन

ज़िंदगानी को ज़िंदाबाद किया

ज़िंदगानी को ज़िंदाबाद किया,
हमने जब हौसला फ़ौलाद किया।

वक्त बर्बाद किया है जिसने,
वक्त ने है उसे बर्बाद किया।

कासा-ए-दस्त[1] लबालब है तेरा,
क्या किया, सजदा[2] या फरियाद[3] किया?

हँस के मिलते थे वो गिर्दाबों[4] से,
आज साहिल[5] से क्यों विवाद किया।

हैं नये दौर के किरदार[6] नये,
क़ैद बुलबुल ने है सैय्याद[7] किया।

बे-मियादी[8] मसर्रतें[9] न मिलीं,
इसलिए ग़म को बे-मियाद[10] किया।

दुश्मनों को दिया नहीं मौका,
दोस्तों ने हमे उस्ताद[11] किया।

हिचकी आने लगी मयखाने में,
हमको नासेह[12] ने फिर याद किया।

अदना[13] हस्ती[14] हैं अनासिर[15] के संग,
बिखरा तो हस्ती को हद्दाद[16] किया।

दिल परख कर समझ गया 'गौतम',
दिल ने ही दिल को है बर्बाद किया।

---

[1]दुआ के लिये हाथ फैलाना (कटोरा) [2]नमाज़ में झुकना

3दुहाई 4भँवर 5किनारा 6चरित्र/आचरण 7बहेलिया
8समय सीमा रहित 9खुशियाँ 10 समय सीमा रहित
11प्रवीण 12उपदेशक 13छोटा 14जीवन
15पंच तत्व 16विस्तृत

दरख़्त फूल रहे बाग़-ओ-वीराने में

दरख़्त[1] फूल रहे बाग़-ओ-वीराने[2] में,
हो गये क़ामयाब[3] अब्र[4] फिर मनाने में।

हुआ है और भी सरसब्ज़[5] चमन में सब्ज़ा[6],
सुकून[7] देते पाँव को हैं आने-जाने में।

निभा तू फ़र्ज़-ए-साक़ी[8], पिला दे प्यासों को,
जमा दे रंग मज़ा आये लड़खड़ाने में।

लुटा तू बेझिझक दरिया पे भरोसा करके,
तुम्हारा माल[9] जमा देगा मालख़ाने[10] में।

ये फ़र्ज़ है, तुम्हारा आज ख़ैर-मक़्दम[11] हो,
दिलों में पेंग हो, कजरी हो गुनगुनाने में।

ये माना देर हो गयी तुम्हे आते-आते,
वक्त ज़ाया[12] न करेंगे गिला[13] फ़रमाने[14] में।

वास्ते तेरे नहीं घर में जगह बन पाती,
ऐ रहमदिल[15] तू ठहर जाना आस्ताने[16] में।

पढ़े उकता के ज़िंदगी के सफ़े[17] क्यों 'गौतम',
मिलीं नयी उसे दिलचस्पियाँ[18] फ़साने[19] में।

---

[1]पेड़ [2]उपवन और जंगल [3]सफल [4]बादल [5]गहरा हरा
[6]घास [7]आराम [8]पिलाने का कर्तव्य [9]दौलत (भाव पानी से है)
[10]भंडार गृह (भाव समन्दर से है) [11]स्वागत [12]बर्बाद [13]उलाहना
[14]कहना [15]दयालु [16]चौखट [17]लाइनें
[18]रोचकता [19]कहानी (भाव है जीवन में)

नींद आयी, तो ख़्वाब आयेंगे

नींद आयी, तो ख़्वाब आयेंगे,
ख़्वाब आयेंगे, तो जगायेंगे।

ख़त्म तक़रीर[1] को हो जाने दो,
उठ खड़े लोग बैठ जायेंगे।

तालियाँ जलसे मे वो लूटेंगे,
आँख-से आँसू जो बहायेंगे।

आयेंगे लाल-बुझक्कड़[2] लेकर,
हर पहेली को वो सुलझायेंगे।

सनसनी है चमन में, आँधी से-
सब्ज़े[3] कुछ ज़ोर आज़मायेंगे।

लोग सूरज से मुतासिर[4] होकर,
दिन ढले अपने ही घर जायेंगे।

पाँव सिर पर उठा के जाने से,
नक़्श-ए-पा[5] कैसे छोड़ पायेंगे?

रूठ कर आईना है तोड़ दिया,
कैसे सूरत को अब सजायेंगे?

संग[6] सहलाते हैं, खाकर ठोकर,
हम-से दीवाने नहीं पायेंगे।

मज़ा आयेगा रूठने में तभी,
हो यक़ीं[7], सब हमें मनायेंगे।

अपनी मर्ज़ी से नहीं आये हम,
अपनी मर्ज़ी से मगर जायेंगे।

मर्सिया[8] लोग पढ़ रहे 'गौतम',
बोलिये, आप क्या सुनायेंगे?

---

[1]भाषण [2] ऊट-पटांग अनुमान लगाने वाला मूर्ख [3]घास
[4]प्रभावित [5]पदचिन्ह [6]पत्थर [7]विश्वास [8]शोक-गीत

घोंसला पेड़ों पर परिंदों का

घोंसला पेड़ों पर परिंदों का,
है हुनर ख़ास हुनरमंदों[1] का।

कभी फुर्सत से बैठ कर सुनिये,
राग-ए-सहर[2] इन विहंगों का।

साक़ी मयख़ाना तो मयख़ाना है,
घर ये हो सकता नहीं रिंदों का।

चाँद खिड़की पे रोज़ आता है,
हाल लेने को नज़रबंदों[3] का।

थोड़ी उम्मीद बनाये रखिये,
फूंकना काम है फ़रज़ंदों[4] का।

मेरी बदकिस्मती का बाइस[5] है,
बारहा[6] टूटना कमंदों[7] का।

फ़िक्र[8] करना, बिला-वजह[9] करना,
काम है ख़ास फ़िक्रमंदों[10] का।

आज की रात बज़्म[11] में 'गौतम',
ज़िक्र क्यों हो गिला-पसंदों[12] का।

---

[1]कुशल [2]सुबह का गीत [3]बंदी [4]बेटा [5]कारण
[6]बारबार [7]रस्सी [8]चिंता [9]अकारण
[10]चिंतित [11]गोष्ठी [12]उलाहना प्रिय

धुआँ उठता है जहां, जाके हवा देते हैं

धुआँ उठता है जहां, जाके हवा देते हैं,
गड़े मुर्दों को खोदकर वो उठा देते हैं।

ठंडे बस्ते में हिफ़ाज़त[1] से हैं रखते मुद्दे,
सबको हर रोज़ थोड़ा धूप दिखा देते हैं।

मौत ही आखिरी दवा है कुछ मरीजों की,
चारागर[2] उनको भी जीने की दुआ देते हैं।

प्यासा मरने नहीं देंगे किसी भी प्यासे को,
गंगाजल पास वो रखते हैं, दिखा देते हैं।

इस चमन के हैं ख़ैर-ख़्वाह[3] चमन-साज़[4] कई,
ख़ास बिरवों को वो गमलों में सजा देते हैं।

मय बुरी चीज है नासेह[5] ने जब समझाया,
रोज़ चख कर सिफ़त[6] रिंदों[7] को बता देते हैं।

पढ़ते हैं तब्सिरा[8] या मर्सिया[9] मालूम नहीं,
बोलते हैं वो जब महफ़िल को रुला देते हैं।

मैं खड़ा होता हूँ महफ़िल में जब कभी 'गौतम',
मेरी सीरत[10] से जो वाक़िफ़[11] हैं, बिठा देते हैं।

---

[1]सुरक्षित [2]चिकित्सक [3]शुभचिंतक [4]माली
[5]उपदेशक [6]गुण/अवगुण
[7]शराबी [8]चर्चा [9]शोक-गीत
[10]आदत [11]परिचित

आईना हमने बनाया ख़ुद को

आईना हमने बनाया ख़ुद को,
और आईना दिखाया ख़ुद को।

उम्र का एक दौर ऐसा था,
मैं ख़ुदा हूँ, था बताया ख़ुद को।

अब किसी से कोई उम्मीद नहीं,
ख़ुद-से हम रूठे, मनाया ख़ुद को।

कल की मसरूफ़ियत[1] पे फ़ख़्र[2] नहीं,
आज तो तनहा[3] है पाया ख़ुद को।

अब कोई दोस्त न रक़ीब[4] कोई,
ख़ुद गिरे और उठाया ख़ुद को।

सबका ईमान परखने के लिये,
बे-ज़बाँ बुत है बनाया ख़ुद को।

मेरी गर्दन में ख़म[5] नहीं आया,
मेरे घुटनों ने झुकाया ख़ुद को।

पास अब कुछ नहीं बचा 'गौतम'
हमने हर सिम्त[6] लुटाया ख़ुद को।

---

[1]व्यस्तता [2]गर्व [3]अकेला [4]विरोधी [5]झुकाव [6]दिशा

ज़िंदगी यादगार हो, ये ज़रूरी तो नहीं

ज़िंदगी यादगार हो, ये ज़रूरी तो नहीं,
सोचना नागवार हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

क़ाबिले-क़द्रो-फ़ख़्र[1] होती है यारी माना,
यारों में ग़मगुसार[2] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

उसका दीदार हो गया अगर आते जाते,
मेहर ये बार-बार हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

कभी भी आँख में आँसू नही अच्छे लगते,
मोती हर आबदार[3] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

आपका एतबार है तो एतबार करें,
हमको भी एतबार हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

रफ़ा-दफ़ा अगर हुआ सुलह-सफाई से,
मामला दरकिनार[4] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

मैं अपनी बात को कहता हूँ साफ़गोई[5] से,
अब कोई साज़गार[6] हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

नींद आती है तो सोना मुफ़ीद[7] है 'गौतम'
नींद में बेक़रार हो, ये ज़रूरी तो नहीं।

---

[1]सम्मान एवं गर्व योग्य [2]दर्द बाँटने वाला [3]चमकदार
[4]एकतरफ (भुलाना) [5]स्पष्ट [6]सहमत [7]सही

खुद-से जिसको लगाव होता है

खुद-से जिसको लगाव होता है,
उसकी मूँछों पे ताव होता है।

अपनी सूरत पे फिदा होने का,
हानिकारक प्रभाव होता है।

गीत गाती नहीं कोई कोयल,
ज़्यादा जब कांव-कांव होता है।

बदले मौसम का हवाला देकर,
आदमी धूप-छाँव होता है।

कौन बाज़ार में नहीं बैठा,
सबका ही मोल-भाव होता है।

काम जब तक नहीं पड़ता कोई,
अकड़ा-अकड़ा स्वभाव होता है।

लब-ए-साहिल[1] पे ठहर जाते हैं,
तेज जब जल-बहाव होता है।

टीसता है जो उम्र भर 'गौतम',
वक्त का ऐसा घाव होता है।

---

[1] *एकदम किनारे*

नये लिबास में वह आदमी पुराना है

नये लिबास में वह आदमी पुराना है,
पुरानी चाल-ढाल से उसे पहचाना है।

नये मिज़ाज का आया है पड़ोसी मेरा,
हमें गूगल[1] में दिखाता पता-ठिकाना है।

सभी के हाथ में स्मार्ट-फोन देखा है,
नई मसरूफ़ियत[2] वाला नया ज़माना है।

ये ऐप[3] हैं या ऐब[4] हैं या ज़रूरत सबकी,
ये गुत्थियां हैं जिन्हें हमको ही सुलझाना है।

पसीना पोछ कर मौसम का हाल-चाल लिया,
यक़ीन कर लिया मौसम बहुत सुहाना है।

जनाब! पहले भी तो जी से काम बनता था,
अभी तो 4जी[5] से आगे और जाना है।

किसी के घर का पता नोट अब नहीं करना,
किसी-का आईडी[6] उसका सही ठिकाना है।

कहीं ना जाइये यूँ अपना मुँह उठाए हुए,
हुजूर आजकल तो चैट[7] का ज़माना है।

वो बेक़रार[8] है दीदार-ए-यार[9] की ख़ातिर,
वो कह रहा था उसे ज़ूम[10] आज़माना है।

निज़ाम[11] रोकता है हाथ मिलाने से हमे,
मिलायें दिल या नहीं, आपको बताना है।

समय के साथ कदम-ताल[12] कर रहा 'गौतम',
समय बतायेगा आगे किधर को जाना है।

[1] Google [2] व्यस्तता [3] App [4] बुराईयाँ [5] 4G [6] ID [7] Chat [8] व्यग्र
[9] मित्र दर्शन [10] Zoom [11] शासन [12] कदम मिलाकर चलना

नई बोतल, नया लेबल, नया मयख़ाना है

नई बोतल, नया लेबल, नया मयख़ाना है,
नये अंदाज़ में साक़ी गया पहचाना है।

नया है दौर, नई हीर है, लैला भी नई,
राँझा-मजनू भी नये, मर्ज़-ए-दिल पुराना है।

नई स्कीम, नई घोषणा, सरकार नई,
नए अंदाज़ से देखेंगे क्या दोहराना है।

नया बुत है, नये घंटे हैं, नए पंडे हैं,
सनम[1] वही है, अगरचे[2] नया बुतख़ाना है।

नये पत्ते, नये मंजर[3] हैं नये मौसम में,
दरख़्त[4] फल जो दे रहा है वो पुराना है।

नए चुनाव में गठजोड़ नए कर लेंगे,
घोषणा-पत्र पुराना है जो चमकाना है।

बात कोई नहीं लगती नई जिसको 'गौतम',
आदमी बेख़बर है या बहुत सयाना है।

---

[1]प्रिय (ईश) [2]यद्यपि [3]पुष्प-गुच्छ [4]पेड़

दुआ थी मांगी किसी की नज़र-में-बंद करे

दुआ थी मांगी किसी की नज़र-में-बंद[1] करे,
नहीं था चाहा हमे घर में नज़र-बंद[2] करे।

किसी की जान को रोना तो ठीक लगता है,
तमाम दुनिया को-रोना, तो रोना बंद करे।

कहर के वक्त राम, गॉड, रब या वाहेगुरू,
जो जिसको मानता हो उसको रज़ामंद[3] करे।

काम कोई नहीं, फ़ुर्सत है और यादें हैं,
किसे दिखाए धूप किसको डब्बा-बंद करे।

सफ़र की इब्तिदा[4] हुई है, दूर मंज़िल है,
निकल पड़ा है जो, वो हौसला बुलंद[5] करे।

अगर है हाथ धो लिया, तो बहुत अच्छा किया,
बला-ए-बद[6] को तो बेहतर है ना-पसंद करे।

फ़साद[7] हो रहा है, बे-नक़ाब[8] मत घूमे,
हसीन चेहरा है, उसको पस-ए-रोबंद[9] करे।

कोई महफ़िल नहीं, इसरार[10] नहीं, फिर 'गौतम'
कलाम[11] रोज़ नया कैसे क़लमबंद[12] करे।

---

[1]आँखों में समाना [2]कैद [3]मनाये [4]प्रारम्भ
[5]ऊँचा [6]बुरी विपदा [7]झगड़ा/विवाद
[8]बिना पर्दा [9]परदे के पीछे (छुपाना)
[10]आग्रह [11]कविता [12]लिखना

मुझे ignore करो, पर ना कहो retired

मुझे ignore[1] करो, पर ना कहो retired[2],
बता दूँ आपको मैं आदमी हूँ re-tyred[3]।

सफेद बाल और गंज हैं गवाह मेरे,
पका हुआ हूँ तजुर्बों[4] से, नहीं sun-dried[5]।

हमारे फेफड़े जब तक जवाब देंगे नहीं,
मुझे उम्मीद है तब तक रहूँगा untired[6]।

हमे भी होगी ज़रूरत किसी दिन कांधों की
सभी दिलों से हमने रक्खा है दिल को wired[7]।

जो कह रहे थे बा-ख़बर[8] हैं, ख़िर्द-मंद[9] हैं वो,
ख़बर उन्हें नहीं इक रोज़ होंगे expired[10]।

अगरचे[11] अच्छी बात होती है खुदमुख़्तारी[12],
बुरा कहो नहीं उसको हुआ जो inspired[13]।

नहीं ग़ालिब[14], नहीं मैं दाग़[15], फ़क़त हूँ 'गौतम',
मुझे कुछ लोग मानते हैं to be admired[16]।

---

[1]ध्यान न देने योग्य [2]सेवा मुक्त (दयनीय) [3]नए टायर के साथ (नव-संकल्प युक्त) [4]अनुभव [5]धूप में सूखा (पका) [6]अक्लांत [7]तार जोड़ना (जुड़ाव) [8]जानकार [9]अक्लमंद [10]समाप्त [11]यद्यपि [12]स्वतंत्रता [13]प्रभावित होना [14]प्रसिद्ध शायर [15]प्रसिद्ध शायर [16]प्रशंसा योग्य

दुनिया में मौत से बड़ी आफ़त कहीं नहीं

(शायर राहत इंदौरी के निधन पर)

दुनिया में मौत से बड़ी आफ़त कहीं नहीं,
हमको ख़बर हुई है अब 'राहत' कहीं नहीं।

सदमे में सुख़नवर[1] हैं और उसके मुरीद[2] भी,
'राहत' नहीं तो बज़्म में बरकत[3] कहीं नहीं।

'राहत' की आरज़ू है ज़माने में सभी को,
'राहत' से बड़ी दुनिया में दौलत कहीं नहीं।

महफ़िल को लूट लेता था 'राहत' कलाम से,
अंदाज़े-बयाँ और वो हरकत कहीं नहीं।

हिंदोस्तां नहीं किसी के बाप की जागीर,
'राहत-सी' साफ़गोई[4] की आदत कहीं नहीं।

करता था मौत से जो ज़मींदारी की बातें,
उस जैसे ज़मींदार-सी इज़्ज़त कहीं नहीं।

हम उसके थे मुरीद दिल-ओ-जान से ''गौतम',
उसके कलाम में थी जो 'राहत' कहीं नहीं।

---

[1]शायर [2]चाहने वाले [3]सौभाग्य [4]स्पष्टवादिता

अंदाज़-ए-बेफ़िक्र में रहते हैं मोहतरम

अंदाज़-ए-बेफ़िक्र[1] में रहते हैं मोहतरम[2],
मिलिये जो बे-नक़ाब[3], बिगड़ते हैं मोहतरम।

जलसों पे है पाबंदी, वो इससे हैं बा-ख़बर,
आईने पर रियाज़[4] अब करते हैं मोहतरम।

घुस आते हैं घर में जो बे-आवाज़-ओ-दस्तक,
ऐसे नक़बज़नों[5] से सब डरते हैं मोहतरम।

हालात मुनासिब नहीं घर में पड़े रहें,
संजीदगी के साथ ये कहते हैं मोहतरम।

कल तक थे बुतपरस्त अब तौबा हैं कर रहे,
सजदे में माथा रोज़ रगड़ते हैं मोहतरम।

कल तक वो बा-नक़ाब[6] हसीनों के थे ख़िलाफ़,
बे-नागा अब नक़ाब पहनते है मोहतरम।

ये आंकड़े सरकारी कर रहे हैं बे-अकड़,
बे-मौत रोज़ इसलिए मरते हैं मोहतरम।

अब हाथ मिलाने की बात क्या करे 'गौतम',
अब दिल भी मिलाने से लरज़ते[7] हैं मोहतरम।

---

[1]चिंता-मुक्त स्वभाव [2]आदरणीय [3]बिना पर्दा
[4]अभ्यास [5]सेंधमार [6]पर्दा पसंद [7]कांपना

हालात हैं जो, उसमे है इंसान की मर्ज़ी

हालात हैं जो, उसमे है इंसान की मर्ज़ी,
क्यों लोग कहा करते हैं, भगवान की मर्ज़ी।

कहने को तो कहते रहे मेहमान हैं यहाँ,
जाने की यहाँ से नहीं मेहमान की मर्ज़ी।

होकर के ग़र्क़-ए-आब[1] अब दरयाफ़्त[2] क्या करें,
मर्ज़ी हो नाख़ुदा[3] की या तूफ़ान की मर्ज़ी।

नादान की है दोस्ती माना वबाल-ए-जान[4],
नादानियों का दिल करे, नादान की मर्ज़ी।

सरहद पे जो करता है निगहबानी[5] मुल्क की,
एक दिन तो पूछ लेते निगहबान[6] की मर्ज़ी।

तय ख़ून और पसीने की कीमत करेगा कौन,
बाज़ार के दस्तूर में धनवान की मर्ज़ी।

ये घर है मेरी मिल्कियत[7] और मेरे नाम है,
इस घर में चल रही मेरी संतान की मर्ज़ी।

क़ातिल ने कहा आख़िरी मर्ज़ी बता ''गौतम',
हम पर ये मेहरबानी, मेहरबान की मर्ज़ी।

---

[1]भँवर में डूबना [2]पूछना [3]मल्लाह/कर्णधार
[4]जान की आफत/विपत्ति [5]रखवाली/सुरक्षा
[6]रखवाला/रक्षक/फ़ौजी [7]जायदाद

हुआ सलाम वीडियो में, रू-ब-रू न मिले

हुआ सलाम वीडियो में, रू-ब-रू[1] न मिले,
मज़ा मिला मगर असली-से हू-ब-हू[2] न मिले।

सराब[3] से कहाँ बुझती है प्यास सहरा[4] में,
बुझेगी कैसे प्यास यदि भरा सुबू[5] न मिले।

कागजी फूलों से गुलदान सजा रक्खा है,
और चाहत है फूल चमन में बे-बू[6] न मिले।

दिलों को छूता नहीं है कलाम पेचीदा,
कोई लज्जत नहीं गर हिन्दी से उर्दू न मिले।

हज़ार दोस्त सही आज के ज़माने में,
रहोगे तनहा अगर कोई भी दिल-जू[7] न मिले।

मुझे यकीन है कुछ अच्छा कह दिया उसने,
हमें रकीबों में कल कोई ऐब-जू[8] न मिले।

दिमाग सोचता है, दिल को ये मंजूर नहीं,
गम-ए-फिराक़[9] में खयाल-ए-जुस्तजू[10] न मिले।

मैंने सीने से लगाकर है बारहा चूमा,
तेरी तस्वीर में हमको तो रंगो-बू न मिले।

गुफ्तगू कोई नहीं करता शहर में 'गौतम',
और ये भी नहीं हर वक्त हाव-हू[11] न मिले।

---

[1]आमने-सामने मिलना [2]एक समान [3]मृगतृष्णा [4]मरुस्थल
[5]मय का प्याला [6] बिना सुगंध का [7]दिलजोई
[8]निंदा करने वाला [9]जुदाई की पीड़ा
[10]तलाशने का विचार [11]शोर

आज़ार भी नहीं, ना ग़मे-रोज़गार है

आज़ार[1] भी नहीं, ना ग़मे-रोज़गार[2] है,
आराम बेशुमार[3] है, दिल बेक़रार[4] है।

महफ़ूज़[5] सारे लोग मिले अपने घरों में,
हैरत[6] है कि माहौल नहीं खुशगवार[7] है।

बुलबुल भी बेजुबान[8] है, कोयल भी बेजुबान,
गोया चमन से लौट गई नौबहार[9] है।

दरवाज़े-दरीचे[10] हैं बंद, लोग ख़बरदार,
हालात पर इंसान का अब इख़्तियार[11] है।

जो भी मिला है उसने नसीहत हज़ार दीं,
इस मुल्क में हर आदमी अब समझदार है।

बैठे हुए क़फ़स[12] में हैं मर्ज़ी से परिंदे,
उड़ना फलक पे आज सबको नागवार[13] है।

एक बेबसी के साथ जिये जा रहे हैं लोग,
देखो जिसे वो लग रहा ज़िंदा मज़ार है।

कुछ भी नहीं है आज ठिकाने पे सलामत,
हर हौसले के सामने एक कोहसार[14] है।

ठहरे हुए समय के साथ हाँफता 'गौतम'
लम्बे सफ़र की चेहरे पे गर्द-ओ-ग़ुबार है।

---

1 बीमारी/आफत 2 कार्यक्षेत्र का असंतोष 3 असीमित 4 व्यग्र
5 सुरक्षित 6 सुखदायी 7 चुप 8 वसंत 9 द्वार-खिड़की
10 नियंत्रण 11 पिंजरा 12 आसमां 13 असहमत 14 पहाड़

रख आलम-ए-बातिन के लिये दीदा-ए-बातिन

रख आलम-ए-बातिन[1] के लिये दीदा-ए-बातिन[2],
क्यों गिन रहा है दूसरों के, अपने एब गिन।

मयख़ाना-ए-साक़ी है, नहीं दैर-ओ-हरम[3],
हंगामा यहाँ पर न करें क़ाफ़िर-ओ-मोमिन[4]।

किरदार-ए-नासेह[5] में जंचता नहीं है दोस्त,
बेहतर है छिछोरा हो मगर यार हो मोहसिन[6]।

इक धूप के टुकड़े ने दरीचों[7] पे दी दस्तक,
आने दो हमे घर में भगाने को भूत-जिन।

पहचान अब आईने मे आता नहीं है मैं,
घर मुझसे पूछता है कहाँ का हूँ मैं साकिन[8]।

अब ये तो ज़रूरी नहीं गर्मी के वास्ते,
हंगामा ख़ेज़ हो हमेशा न्यूज़ बुलेटिन।

मिलते हैं थोड़ा दूर से अब सबसे चारागर[9],
मय्यत[10] के लिये उनको पहले चाहिये ज़ामिन[11]।

मायूसी बयां कर रही है, छोड़ो क्या पूछें,
कैसा है कू-ए-यार[12] बे-हंगामा-हा-ए-दिन[13]।

सुनते थे छोटी दुनिया है, पहचाने रास्ते,
दोनों पसे-नक़ाब[14] हैं पहचान ना-मुमकिन।

आसान मरना आदमी का हो गया 'गौतम',
जीना कठिन था पहले भी अब और भी कठिन।

---

1 अन्तर्मन 2 अंतर्दृष्टि 3 मन्दिर-मस्जिद 4 हिन्दू-मुस्लिम
5 उपदेशक की भूमिका मे 6 गाढ़े समय का साथी

7 *खिड़कियाँ* 8 *निवासी* 9*चिकित्सक* 10 *मृत शरीर*
11*जिम्मेदारी लेने वाला* 12 *यार की गली*
13 *बिना दैनिक हल्ला-गुल्ला के*
14 *नक़ाब के पीछे*

हालात बदल सकते हैं दो दिन में भी, लेकिन

हालात बदल सकते हैं दो दिन में भी, लेकिन,
रखिये बचा के थोड़ी सी उम्मीद भी, लेकिन।

सूरत भी लाजवाब है, सीरत भी लाजवाब,
दिल जीतने का चाहिये अन्दाज़ भी, लेकिन।

बीमार ठीक होंगे दवा और दुआ से,
आराम बहुत देते हैं अल्फाज़ भी, लेकिन।

नासेह खींचता रहा तस्वीर-ए-जन्नत,
दो घूँट पीकर बोलता बरअक्स[1] भी, लेकिन।

बल पड़ गये हैं माथे पे हाकिम के आजकल,
हो सकता है कुछ मामलों पे गौर भी, लेकिन।

वाजिब है चोर जेब हो सबकी कमीज़ में,
रखने को उसमे चाहिये कुछ माल भी, लेकिन।

चाहूँ भी तो ख़याल ये जाता नहीं दिल से,
सबके ख़याल में अगर आता कभी, लेकिन।

है वक़्त ही एहसासे-दर्दे-ज़ख्म[2] का मरहम,
भरने को वक़्त भरता है हर ज़ख्म भी, लेकिन।

एहसाँ[3] दिल-ओ-दिमाग़ पर उसका रहा 'गौतम',
जिसने कहा ''हो जाता वो हाज़िर अभी, लेकिन''।

---

[1]विपरीत [2]घाव की पीड़ा का अनुभव [3]उपकार

घर नहीं लग रहा है घर जैसा

घर नहीं लग रहा है घर जैसा,
कमरा-कमरा लगे क़बर[1] जैसा।

किसी कमरे में एक बिस्तर है,
जिस्म जिसपर बिछा चादर जैसा।

कभी बंदर-सा उछलता है दिल,
कभी सो जाता है अजगर जैसा।

बद-नज़र से डरे हुए हैं सब,
नक़ाब बांधा है सिपर[2] जैसा।

रखता हर चीज है ठिकाने पर,
खुद नज़र आता है अबतर[3] जैसा।

सबकी औकात हो गई चिल्लर,
हौसला हो गया सिफ़र[4] जैसा।

गुजरे दिन मील के पत्थर जैसे,
ज़ीस्त[5] का हश्र कैलंडर जैसा।

आईने से नज़र चुराने लगे,
अक्स लगने लगा दीगर[6] जैसा।

सुबह को रोना शाम को रोना,
तौबा! बे-अक़्ल-ओ-हुनर[7] जैसा।

बे-सबर, बे-कलाम, बे-महफ़िल,
आज 'गौतम' भी है मुज़्तर[8] जैसा।

---

1 क़ब्र 2 कवच 3 बिखरा 4 शून्य 5 जीवन
6 अन्य 7 ज्ञान और कौशल विहीन 8 बेचैन

रात भर आफ़ताब देखा है

रात भर आफ़ताब[1] देखा है,
लोग कहते हैं ख़्वाब देखा है।

चाँदनी ओढ़ के सोया आलम,
चाँद को कामयाब देखा है।

दरिया में मीन[2] मर गई प्यासी,
दरिया को आब-आब देखा है।

रात भर कैसे वो सोया होगा,
रात भर उसने ख़्वाब देखा है।

मिल के आया है जबसे साक़ी से,
नासेह[3] को नुक्ता-याब[4] देखा है।

सुन के हमको यकीं नहीं होता
साहिब को बे-रुआब देखा है।

अच्छे दिन आ गये मरीज़ों के,
चारागर[5] दस्तियाब[6] देखा है।

बाद मुद्दत के कल रक़ीब दिखा,
गोया खोया अहबाब[7] देखा है।

गैर-मुमकिन बयान है 'गौतम',
आपने कोई ख़्वाब देखा है।

---

1 सूर्य 2 मछली 3 नसीहत देने वाला
4 एक छोटी बात/मुद्दा समझ लेने वाला
5 चिकित्सक 6 सहज उपलब्ध 7 दोस्त

अगर सहमति बनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी

अगर सहमति बनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी,
अगर फिर से ठनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

परिंदे खुद क़फ़स[1] में लौट कर आने लगे अब तो,
फ़िज़ा[2] में सनसनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

हम उनकी बेरुख़ी के तो हमेशा से रहे क़ायल,
नज़र हम पर तनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

पलट आया है मयख़ाने से नासेह[3] भारी कदमों से,
तबीयत अनमनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

गये जो जानिब-ए-मंज़िल[4] उधर से फिर नहीं लौटे,
ख़बर सब ने सुनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

ग्रहों की चाल पर रखता नजूमी था नज़र पैनी,
चढ़ा उस पर शनी[5] है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

कहीं कोई नहीं संकेत मौसम के बदलने का,
हवा में कनकनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

सभी ये मानते हैं विरसे[6] मे उसको मिला था हक़,
अगर कुर्सी छिनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

ये है शमशीर क़ातिल की, है फबती ख़ून-तर होकर,
पसीने से सनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

किसी अदना से मिलने तो कोई जाता नहीं 'गौतम',
मिली चेतावनी है तो, यक़ीनन बात कुछ होगी।

---

1 पिंजरा 2 वातावरण 3 नसीहत देने वाला
4 लक्ष्य की ओर 5 शनि ग्रह 6 विरासत में

एहसान है ख़ुदा का, साथ valentine है

एहसान है ख़ुदा का, साथ valentine[1] है,
सोने पे सुहागा है, साथ quarantine[2] है।

ऐसी हो नज़रबंदी तो, हो सबको मुबारक,
माहौल पुर-सुकून है, साक़ी है wine[3] है।

आदत है गिरफ़्तारी की और सात जनम की,
रोना नहीं कोरोना को, total benign[4] है।

चलती नहीं ता-ऊम्र कोई चीज़ दोस्तों,
ये कितने दिन चलेगी, चीन का design[5] है।

क़ंदील अपने हौसले की रखिये जलाकर,
हर रात बीत जाने पर होती sunshine[6] है।

कहने के लिये लिख दी है मैंने गज़ल 'गौतम',
इस पर मगर बदज़ात कोरोना का sign[7] है।

---

1 प्रेमी/प्रेमिका 2 संपर्क रहित 3 शराब
4 पूर्णतया कैंसर मुक्त 5 बनावट
6 धूप 7 हस्ताक्षर

आलिम लगे हुए हैं तो इक काम करें हम

आलिम[1] लगे हुए हैं तो इक काम करें हम,
मुद्दा सुलझ ही जायेगा, आराम करें हम।

साहिब ने जारी कर दिया फ़रमान, ध्यान दें,
दो गज़ के फ़ासले से अब सलाम करें हम।

जोश-ए-जवानी[2] में है बे-नक़ाब[3] सरे-राह,
गर दे वो इजाज़त तो फिर बदनाम करें हम।

गर्दन सम्हाल कर तो आ गये हैं दार[4] तक,
बतलायें क्या करना है, इंतज़ाम करें हम।

फ़तवा[5] निकाल कर के मौलवी ने ये कहा,
बेहतर है कि फ़तवे का एहतिराम[6] करें हम।

कोई भी एहतिमाम[7] नहीं आने-जाने का,
इस मुद्दे पर अब आओ चक्का-जाम करें हम।

ता-उम्र ही पाबंद रहे हैं निज़ाम[8] के,
सहरा में ही एहसासे-पहलगाम करें हम।

फैला हुआ हवा में ख़तरनाक ज़हर है,
ऐसे में कहाँ जाके अब क़याम[9] करें हम।

हीला-हवाला[10] कोई न सरहद पे हो 'गौतम',
इक आहनी[11] दीवार सर-अंजाम[12] करें हम।

---

1 विद्वान 2 जवानी के उत्साह में 3 बिना पर्दा
4 सूली 5 धर्मानुसार आदेश 6 सम्मान 7 व्यवस्था
8 शासन 9 रुकना 10 ना-नुकुर 11 फौलादी
12 तैयारी/तैयार करना

रिंद क्यों आजकल आते नहीं मयख़ाने में

रिंद[1] क्यों आजकल आते नहीं मयख़ाने में,
लग रहा आ गये नासेह[2] के बहकाने में।

हद्द है देखने-छूने से भी तौबा कर ली,
पसे-पर्दा[3] भी हैं और हाथ हैं दस्ताने में।

तौबा के बाद भी एहसास-ए-गुनाह[4] रहा,
बारहा[5] हाथ धो रहे हैं ग़ुसलख़ाने[6] में।

यार के कूचे में अब भीड़ नहीं होती है,
जाके देखा तो लगा आ गये वीराने में।

खिचड़ी तो लाजवाब साथ सबके पकती थी,
मजा तनहा न पकाने में है न खाने में।

इलाही[7] दर्दे-दिल[8] से ख़ौफ़[9] हो रहा है हमें,
चारागर सारे हैं मसरूफ़[10] शिफ़ाख़ाने[11] में।

याद करने लगे हैं रब को, जो ता-उम्र कभी-
न हरम[12] में गये और न कभी बुतख़ाने[13] में।

क्या कहें कैसे कट रही है ज़िन्दगी 'गौतम',
लगता है बंद हो गये हैं क़ैद-ख़ाने[14] में।

---

[1] शराबी [2] नसीहत देने वाला [3] पर्दा (नक़ाब) के पीछे
[4] पाप का बोझ [5] बार-बार [6] स्नानघर [7] ख़ुदा
[8] हृदय की पीड़ा (heart attack)
[9] भय [10] व्यस्त [11] अस्पताल
[12] मस्जिद [13] मंदिर [14] जेल

रिंद फिर लौटकर आ जायेंगे मयख़ाने में

रिंद[1] फिर लौटकर आ जायेंगे मयख़ाने में,
रंजो[2]-ग़म फिर से डूब जायेंगे पैमाने में।

हमने पीकर यही जाना, मज़ा पीने में नहीं
मज़ा है गिरने, सम्हलने में, लड़खड़ाने में।

कोई दहशत[3] नहीं मजनू को रोक पायेगी,
कल मिलेगा पड़ा लैला के आस्ताने[4] में।

एक दिन लोग बे-नक़ाब[5] दिखाई देंगे,
लोग मसरूफ़[6] होंगे चोंच फिर लड़ाने में।

कोई कारण नहीं उम्मीद का दामन छोड़े,
हौसला है बचा बाकी अभी दीवाने में।

उम्र सारी गुज़ारने के बाद राज़ खुला,
है सनम[7] दिल में और दिल था सनम-ख़ाने[8] में।

दिन बुरे आते हैं अपनों को परखने के लिये,
काम मौसम सभी आते चमन सजाने में।

वक्त के साथ बदल जायेंगे ये दिन 'गौतम',
फ़ायदा[9] कुछ नहीं हालात पर गुर्राने में।

---

[1] शराबी [2] दुःख [3] आतंक [4] चौखट [5] बिना पर्दा [6] व्यस्त
[7] ईश्वर [8] मंदिर [9] लाभ

जरा टीवी तो खोलो, क्या कहाँ किसने किया है

जरा टीवी तो खोलो, क्या कहाँ किसने किया है,
सभी चैनल बतायेंगे जो हा-ओ-हू-रिया[1] है।

हमें है लग रहा बन जाते सब मेढक कुएँ के,
ख़बर दुनिया की दी है मीडिया ने, शुक्रिया है।

ख़बर से ज्यादा है आवाज़ करती ख़ौफ़ पैदा,
ग़ज़ब अंदाज़-ए-एंकर[2] है जैसे माफ़िया[3] है।

रहे हम बेख़बर, उसने पिलाया हमने पी ली,
मिलाया मय में था क्या, पूछिये जो साक़िया[4] है।

ग़ज़ल में अलहदा अंदाज़ हो बेहतर है, लेकिन
मुकर्रर लोग कहते हैं सही जब क़ाफ़िया[5] है।

लगाता सेंध है माज़ी में जो गाहे-बगाहे,
मुझे लगता है मेरे घर में कोई भेदिया[6] है।

चला था सू-ए-घर[7] पैदल मरा वो राह में क्या,
सियापा[8] चार-सू[9] है, और लब पर मर्सिया[10] है।

लगा था कल समझ में आ गई है बात 'गौतम',
नया करके खुलासा उसने फिर उलझा दिया है।

---

[1]रिया का हल्लागुल्ला (hue & cry about Riya Chakraborty)
[2]संचालक का हाव-भाव [3]विधि विरोधी
[4]मय पिलाने वाला [5]अंत्यानुप्रास [6]गुप्तचर
[7]घर की ओर [8]मात
[9]चारों ओर [10]शोक गीत

मेरी दादी के पास सिर्फ एक कहानी थी

मेरी दादी के पास सिर्फ एक कहानी थी,
उस कहानी में एक राजा था एक रानी थी।

उस कहानी में था युवराज भी मेरे जैसा,
थी परी एक जो युवराज की दीवानी थी।

पास में लकड़ी का घोड़ा था वो भी जादू का,
छूता था आसमान खूँटी इक दबानी थी।

और इक दैत्य था, रहता था बादलों के परे,
पास में उसके क़ैद वो परी लासानी[1] थी।

नन्ही तलवार से लड़ता था परी की खातिर,
दैत्य को मारकर उसको परी छुड़ानी थी।

उसके आगे की कहानी कभी सुनी ही नहीं,
इतना सुनते ही मुझे नींद जो आ जानी थी।

याद बस इतना है एक राजा था एक रानी थी,
और सो जाने में होती बड़ी आसानी थी।

और अब नींद नहीं आती है तुझको 'गौतम',
याद कर कितनी खुशनसीब ज़िन्दगानी थी।

---

[1] *अद्वितीय*

सुबह है दूर बहुत इसलिये व्याकुल होंगे

सुबह है दूर बहुत इसलिये व्याकुल होंगे,
सुबह से पहले ही सारे चराग़ गुल होंगे।

गुज़ारी रात है ख़्वाबों से गुफ़्तगू करते,
उजाले होंगे तो आँखों में तज़लजुल[1] होंगे।

पकड़ के नब्ज़[2] को बैठे हुए हैं चारागर,
थमेगी नब्ज़ तो सौ तरह तग़ाफ़ुल[3] होंगे।

मुझे बताई उसने बात दुनियादारी की,
मुझे यक़ीन है बदले बहुत केंचुल होंगे।

वो बैठता तो है महफ़िल में बोलता ही नहीं,
ज़ेहन में ख़ास ही एहसास-ओ-तखय्युल[4] होंगे।

मिले रूदाद[5] नहीं हैं अभी तक मीटिंग के,
बड़े पेचीदा मामलात तअत्तुल[6] होंगे।

उड़ा रहे हैं धुआं जो बड़ी बेफ़िक्री से,
वो बाख़बर भी होंगे, हाथ में बिगुल होंगे।

बदल गये हैं अब हालात मानता नहीं दिल,
मगर कहा है चैनलों ने तो, बिल्कुल होंगे।

पसंद ख़ास है घोड़े हों या छोले 'गौतम',
गधे भी लाने को लगता गये काबुल होंगे।

---

1 *हल्ला गुल्ला* 2*नाड़ी* 3 *उपेक्षा* 4*कल्पना/विचार*
5*ब्योरा* 6*अड़ना/मतभेद*

थके तो बैठ गये मील-का-पत्थर बन कर

थके तो बैठ गये मील-का-पत्थर बन कर,
सफ़र में होके सफ़र के नहीं रहे अक्सर।

हमारे साथ कारवाँ में हमसफ़र थे कई,
निकल गया कोई आगे, रुका कोई थक कर।

कौन साहिल[1] में या गिर्दाब[2] में डूबे कितने,
बिना देखे बहे जाता है दरिया सू-ए-बहर[3]।

हमने दरख़्वास्त[4] की कमरे से निकलिए साहिब,
उसी दम हो गया संजीदा-ओ-ख़फ़ा अफसर।

किसको तरजीह दें जलसे में सदारत के लिये,
एक में एब-ओ-हुनर, एक में है अक्स-ए-हुनर[5]।

आ गया कल वो अचानक ग़रीबख़ाने में,
हाले-दिल पूछ कर रुख़सत हुए बंदा-परवर।

यहाँ से जब भी गुज़रता हूँ ठहर जाता हूँ,
यहाँ कभी खिला करता था एक गुलमोहर।

देर से ही सही एहसास हो गया 'गौतम',
आलमे-फ़ानी[6] में सबका वजूद है असग़र[7]।

---

[1] *दरिया का किनारा* [2] *भंवर* [3] *सागर की ओर* [4] *आवेदन*
[5] *कौशल का आभास* [6] *नश्वर संसार* [7] *अति सूक्ष्म*

दिये को हौसला देने को परवाना ज़रूरी है

दिये को हौसला देने को परवाना ज़रूरी है,
उजाले के लिये बाती को सुलगाना ज़रूरी है।

किसी पर जान को क़ुर्बान करना ही नहीं काफ़ी,
सितम बरदाश्त करने का हुनर आना ज़रूरी है।

किधर मंज़िल ख़ुदा जाने, किधर राहें ख़ुदा जाने,
सफ़र के वास्ते अब ऐसा दीवाना ज़रूरी है।

तेरे गुलदान के गुल काग़ज़ी क्यों लग रहे मुझको,
अगर असली हैं तो फिर बू-ए-मस्ताना[1] ज़रूरी है।

अगरचे दिल को बहलाने को सब अफ़साना[2] पढ़ते हैं,
जिसे हम भूल न पायें वो अफ़साना ज़रूरी है।

दरो-दीवार के हर ख़्वाब में इक ख़्वाब है पिन्हाँ[3],
रहे घर चाहे बे-बुनियाद, तहख़ाना ज़रूरी है।

तजुर्बेकार कहते हैं अगर है लूटना महफ़िल,
सभी के वास्ते फिर फ़ैज़-ए-मयखाना[4] ज़रूरी है।

किसी पेचीदा उलझन से उलझने से है गर बचना,
तो दिल को गेसू-ए-पुर-ख़म[5] में उलझाना ज़रूरी है।

नया मुद्दा नहीं है कोई तो चैनल चलाने को,
पुराने मुद्दे पर ही चर्चा रोज़ाना ज़रूरी है।

शहर में भीड़ की कोई कमी रहती नहीं 'गौतम'
मगर इस भीड़ में इक जाना-पहचाना ज़रूरी है।

---

[1] *मस्त करने वाली सुगंध* [2] *किस्सा* [3] *निहित*
[4] *शराब से लबरेज* [5] *घुंघराले बाल*

सुब्ह-दम फिर-से आदमी को हाँकने निकला

सुब्ह-दम फिर-से आदमी को हाँकने निकला,
सारा दिन दौड़ कर सूरज है हाँफने निकला।

लौट कर मौन सो गया था जो थका-हारा,
घोंसले से वो परिंदा है चहकने निकला।

पार्क में तितलियों-भँवरों की टोलियाँ आयीं,
एक बूढ़ा भी अपना जिस्म सेंकने निकला।

आँख खुलते ही सुलगती है पेट की भट्‌टी,
आदमी अपने को भट्‌टी में झोंकने निकला।

दिन नया है, मगर मंज़र[1] वही पुराना है,
आदतन आदमी घर से है चौंकने निकला।

फिर पुकारा हरम[2] ने और सनम-ख़ाने[3] ने,
यक़ीन-ओ-एतबार कोई सौंपने निकला।

एक जंगल था यहाँ जिसकी सिफ़त[4] है बाकी,
आदमी एक-दूसरे को नोचने निकला।

इक महाजन का कर्ज़ ज़िन्दगी हुई 'गौतम',
आज का ब्याज महाजन है माँगने निकला।

---

1 *दृश्य* 2 *मस्जिद (काबा)* 3 *मंदिर* 4 *लक्षण*

एक-सा रहता नहीं वक्त बदल जाता है

एक-सा रहता नहीं वक्त बदल जाता है,
बा-हुनर आदमी हर वक्त बदल जाता है।

कोई मतलब हो या हालात की मजबूरी हो,
लहजा कितना भी रहे सख़्त बदल जाता है।

खेल या ज़िन्दगी हो प्यादे की फ़ितरत है वही,
फ़रज़ी[1] बनते ही वो यक-लख़्त[2] बदल जाता है।

ये डेमोक्रेसी[3] है अवाम[4] से मिल कर रहिये,
रूठा अवाम तो फिर तख़्त[5] बदल जाता है।

ये नया दौर है तहज़ीब नई है इसकी,
यार जिगरी सही कमबख़्त बदल जाता है।

अब्र हो मेहरबान, सब्ज़ा[6] तो फिर सब्ज़ा है,
चमन में सूखता दरख़्त बदल जाता है।

हो कड़ी धूप तो चेहरा सियाह होता है,
ख़ास लोगों का रंग-ओ-रक्त बदल जाता है।

छेड़ कर कीजिये नाराज़ देखने के लिये,
चेहरा वो शर्म से आरक्त[7] बदल जाता है।

यही बेहतर है हमसफ़र से खबरदार रहें,
रहगुज़र में जनाब रख़्त[8] बदल जाता है।

अपनी हस्ती से ना-उम्मीद क्यों रहे 'गौतम',
देखते-देखते ही बख़्त[9] बदल जाता है।

---

[1] *शतरंज में वज़ीर/रानी* [2] *एक ही बार में* [3] *प्रजातंत्र* [4] *प्रजा*
[5] *सत्ता* [6] *घास* [7] *लाल* [8] *सामान* [9] *भाग्य*

आख़िरी सफ़्हा लिखेंगे नहीं अफ़साने का

आख़िरी सफ़्हा[1] लिखेंगे नहीं अफ़साने का,
किया ईजाद[2] तरीका नया चिढ़ाने का।

कुत्ता आवारा था राही को जिसने काटा था,
मुद्दा है ज़ेरे-बहस कुत्ता है किस थाने का।

केस से ज़्यादा सुर्ख़ियाँ[3] बटोर लेता है,
मामला सारे गवाहों के पलट जाने का।

बायें मस्जिद से मुड़ के दायें मुड़ बुतख़ाने से,
पता नासेह[4] ने समझाया यूँ मयख़ाने का।

हमने जब पूछा शहर में हो चराग़ाँ कैसे,
मशवरा उसने दिया हमको घर जलाने का।

रात महफ़िल में थी सरगर्मी भी, खामोशी भी,
लोग पढ़ते रहे कलाम इक दीवाने का।

उसने मक़्तल[5] में बुला कर कहा, जा छोड़ दिया,
ये नया ढंग है क़ातिल का सितम ढाने का।

वो सिरफिरा था गिरफ़्तार हो गया है जो,
उस पर आरोप है हाकिम का सिर दुखाने का।

बात क्यों सीधे मुँह तुझसे करे कोई 'गौतम',
गुनाह करते हो तुम रोज़ मुस्कुराने का।

---

[1] *पेज/पृष्ठ* [2] *आविष्कार* [3] *हेडलाइन*
[4] *नसीहत देने वाला* [5] *वधस्थल*

रात भर माहताब की बातें

रात भर माहताब[1] की बातें,
दिन में की आफताब[2] की बातें।

क्या हैं हालात, क्या बतायें हम,
सुनिये आली-जनाब[3] की बातें।

छोड़िये, दिल बहुत दुखायेंगी,
दिल-ए-ख़ाना-ख़राब[4] की बातें।

ख़्वाब तो ख़्वाब हैं, देखे होंगे,
याद क्या करना ख़्वाब की बातें।

उसने साहिल[5] पे बैठ कर की है,
दरिया-से गर्के-आब[6] की बातें।

पहले उम्रे-दराज़[7] मांगी, फिर-
की है उम्रे-हुबाब[8] की बातें।

सुबह-दम रब की बात कर लेंगे,
शाम है, कर शराब की बातें।

रोज़ सहरा[9] में भटकने वाले,
कर रहे थे सराब[10] की बातें।

बात अब आसमान की छोड़ो,
आओ कर लें तुराब[11] की बातें।

कल सियासत पे बात कर लेंगे,
आज हो हम-अज़ाब[12] की बातें।

कोई उम्मीद अभी बाकी है,
फिर छिड़ी इंतिखाब[13] की बातें।

फटे जूते दिखाने वालों से,
उसने की है जुराब[14] की बातें।

उसने रुख़[16] से नक़ाब[16] सरकाया,
और फिर की हिजाब[17] की बातें।

पहले खिलने तो दो गुलाबों को,
फिर हो बू-ए-गुलाब[18] की बातें।

दुनिया जिसने नहीं देखी 'गौतम',
वो है करता किताब की बातें।

---

1 *चाँद* *2 सूरज* *3 मान्यवर* *4 बर्बाद दिल* 5 *किनारे पर*
6 *पानी में डूबने वाला* *7 दीर्घायु* *8 बुलबुले की आयु*
9 रेगिस्तान *10 मृगमरीचिका* *11 धरती/धूल*
12 समान दुःख वाले *13 चुनाव* *14 मोजा*
15 चेहरा *16 पर्दा* *17 शर्म / हया (लज्जा)*
18 गुलाब की महक

पांवों तले ज़मीन है सिर पर है आसमान

पांवों तले ज़मीन है सिर पर है आसमान,
वो बे-मकान कहता है अल्लाह मेहरबान।

रहज़न[1] के लिये पास में सामान नहीं है,
सोयेगा थकन ओढ़ के पूरा है इत्मीनान।

कोई ग़मे-फ़िराक़[2] न उम्मीद-ए-विसाल[2],
बेफ़िक्र आदमी है फ़क़ीराना[3] आन-बान।

सोता है जैसे आया हो घोड़ों को बेच कर,
दिल पर न कोई बोझ, किसी का नहीं एहसान।

सौदाई[4] है देता है दुआ बेवजह सबको,
उसकी किसी के साथ कोई जान-न-पहचान।

आया किधर से और किधर जायेगा वो कल,
हैजान[5] कभी करता है, करता कभी हैरान।

जीने के लिये आदमी की रोज़ कशमकश,
हर रोज़ है सबक़ नया, हर रोज़ इम्तिहान।

बेखौफ़ ज़िन्दगी का सफ़र काटता 'गौतम',
अल्लाह की अमान में, अल्लाह निगहबान।

---

1 *जुदाई की पीड़ा* 2 *मिलन की आशा*
3 *भिक्षुक जैसा* 4 *पागल* 5 *उत्साहित*

अच्छा होता अगर कुछ ऐसी रिवायत होती

अच्छा होता अगर कुछ ऐसी रिवायत[1] होती,
रू-ब-रू[2] होने पर ही दर्ज़ शिकायत होती।

बेज़ुबानों की भी आवाज़ सुनाई देती,
साफ़गोई[3] से कहने-सुनने की आदत होती।

उठाये जायें हर जवाब पर सवाल अगर,
जवाब देने की आदत बनी आफ़त होती।

किसी लिहाज़ में रिश्ते निभाए जाते हैं,
नहीं तो आदमी की सबसे अदावत[4] होती।

लगाम लगती बे-लगाम-ज़ुबानों पे, अगर-
अदबो-तहज़ीब[5] ही सबसे बड़ी दौलत होती।

बात से बात निकलकर है दूर तक जाती,
बात बेलाग[6] अगर कहना शराफ़त होती।

काम सच से अगर बन जाता इस ज़माने में,
किसलिए फिर वकील और अदालत होती।

ये खरे सिक्के हैं इनको सम्हाल कर रखिये,
अगरचे[7] रहमोकरम की नहीं कीमत होती।

लिखते अच्छा हो, हुस्नो-इश्क़ पर लिक्खा होता,
तो आज आपकी भी बज़्म[8] में शोहरत होती।

झूठ से बात ख़त्म की, किया बेहतर 'गौतम',
सच अगर बोलते रहते तो क़यामत[9] होती।

---

1 *परम्परा* 2 *आमने-सामने* 3 *साफ़-साफ़* 4 *शत्रुता*
5 *सम्मान और संस्कृति* 6 *बेझिझक* 7 *यद्यपि*

[8] *महफ़िल* [9] *मुसीबत/हंगामा/प्रलय*

ज़हे-नसीब, मेरे सिर पे है तोहमत आई

ज़हे-नसीब[1], मेरे सिर पे है तोहमत[2] आई,
मुझे खुशी है मेरे हिस्से में शोहरत[3] आई।

हमारे नाम का चर्चा भी होगा दुनिया में,
खुली है लाटरी मेरी, है मसर्रत[4] आयी।

लिबास जब तलक बेदाग था खिलता नहीं था,
हुआ जो दागदार बदन पर खिलअत[5] आयी।

उसके दीवानों में मेरा भी नाम दर्ज़ हुआ,
मेरे ख़िलाफ़ इसलिये है हुकूमत आयी।

किसे फुर्सत है यहाँ बददुआ देने के लिये,
ये मेहर ख़ास है, अपनों की बदौलत आयी।

रिंद[6] के साथ में साक़ी[7] भी था नासेह[8] भी था,
देर से हमको समझ में ये सियासत[9] आयी।

अपने दुश्मन का अब सदका[10] उतारा करते हैं,
सामने दोस्तों की जब से असलियत आई।

मेरी ठोकर पे ज़माना था कल तलक 'गौतम',
हुए आफ़त से जो दो-चार इबादत आयी।

---

1 *किस्मत से* 2 *आरोप* 3 *प्रसिद्धी* 4 *खुशी*
5 *सम्मानार्थ दी जाने वाली पोशाक*
6 *शराबी* 7 *शराब पिलाने वाला*
8 *नसीहत देने वाला* 9 *राजनीति*
। 10 *बरी नजर उतारना/खैर मनाना*

आई ख़बर है शाम तक आयेंगे मान्यवर

आई ख़बर है शाम तक आयेंगे मान्यवर,
क्यों आ नहीं पाते हैं, बतायेंगे मान्यवर।

तक़लीफ़ वो लोगों की भी दरयाफ़्त[1] करेंगे,
तक़लीफ़ पहले अपनी सुनायेंगे मान्यवर।

सिर अपना झुकाते नहीं बे-बात कभी वो,
माला अगर है सिर को झुकायेंगे मान्यवर।

बस फ़िक्र-ए-अवाम[2] के इज़हार[3] के लिये,
फिर आज एक भीड़ जुटायेंगे मान्यवर।

वो खाली हाथ आज तक आये नहीं कभी,
कुछ तो हवा में आज लुटायेंगे मान्यवर।

रूठा रहे कोई उन्हें मंज़ूर नहीं है,
रूठे हैं जो फिर उनको मनायेंगे मान्यवर।

राहत की बात करते हैं राहत के वास्ते,
फिर खिचड़ी बीरबल की पकायेंगे मान्यवर।

छोड़ेंगे नहीं लोगों की सेवा का वो अवसर,
सौगंध आज फिर से उठायेंगे मान्यवर।

हों लोग परेशान ये उनको नहीं पसंद,
कुछ देर ठहरकर चले जायेंगे मान्यवर।

पीछा छुड़ाने के लिये आओ कहें 'गौतम',
फिर आपको इस बार जितायेंगे मान्यवर।

---

[1] *पता करना* [2] *जनता की चिंता* [3] *प्रकट करना*

फ़रज़ी बना तो आड़ा-तिरछा चला पियादा

फ़रज़ी[1] बना तो आड़ा-तिरछा चला पियादा[2],
अब खेल में उसी का रहता दख़ल[3] ज़ियादा[4]।

नासेह[5] के क़ब्ज़े[6] में मयख़ाना आ गया तो,
साक़ी है सिर झुकाये, हर रिंद7 है बे-बादा[8]।

नाराज़ होके हमसे उठ कर चला गया वो,
हमने सवाल पूछा था उससे सीधा-सादा।

मालूम नहीं उससे सब लोग डर गये क्यों,
घर से निकल पड़ा है बंदा वो सर-ए-जादा[9]।

शर्मिंदा क्यों हुआ वह मैं जान नहीं पाया,
पीने को हमने मांगा था उससे आब-ए-सादा[10]।

उम्मीद से ज़ियादा पाली है ज़िद्द उसने,
हाकिम से मिलने आया है फिर वो रोज़-ए-वादा[11]।

इस सादगी पे उसकी क़ुर्बान हो गये हम,
गर जी रहे अभी तक तो तोड़ा किसने वादा।

आँधी के सामने जो डट कर खड़े हुए थे,
हमने चमन में देखे वो पेड़ बे-लबादा[12]।

गर्दन पे छुरी रखते ही हाथ कांप जाये,
क़ातिल ही फिर बताये दिल में है क्या इरादा।

घायल की गति समझता है जो हुआ हो घायल,
दर्द-ए-नवाबज़ादा, समझे नवाबज़ादा।

कमज़ोर इस शजर की मिट्‌टी पे पकड़ है अब,
दीमक की बदौलत अब है झड़ रहा बुरादा।

है वक्त बा-मुरव्वत[13], रखता है नज़र लेकिन,
अब देखिये करेगा कब जान का तगादा[14]।

महफ़िल में कल उसे फिर पहचाना गया 'गौतम',
उसको गया निकाला महफ़िल से, हस्बे-वादा[15]।

---

1 *रानी/मंत्री* 2 *पैदल* 3 *पहस्तक्षेप* 4 *अधिक* 5 *नसीहत देने वाला*
6 *अधिकार में* 7 *शराबी* 8 *बिना शराब* 9 *राह पर* 10 *सादा पानी*
11 *वादा किया गये दिन पर* 12 *वस्त्र विहीन (बिना पत्तियों के)*
13 *कृपालु* 14 *भुगतान का आग्रह* 15 *वादा अनुसार*

ज़ेब है उसकी जेब का वो अधेला सिक्का

ज़ेब[1] है उसकी जेब[2] का वो अधेला[3] सिक्का,
सबको हैरत में डालने लगा उसका सिक्का।

उसकी गिनती भी है आज हो गई ज़रदारों[4] में,
खुश है वो आज काम आया अकेला सिक्का।

दांत से उसको पकड़ना वो जानता है नहीं,
ले उड़ेगा किसी दिन कोई उचक्का सिक्का।

मैं नहीं कहता हूँ, बाज़ार में सब कहते हैं,
आज के दौर का हर आदमी खोटा सिक्का।

सिक्के से ज्यादा है कीमत उसी की दुनिया में,
चार-सू चल रहा है जिसके नाम का सिक्का।

हिन्दू मुस्लिम में कोई फर्क़ कभी करता नहीं,
घूमा सौ बार सोमनाथ और मक्का सिक्का।

आपा-धापी है मची इसको पकड़ने के लिये,
लोग पीछे हैं, आगे दौड़ता चक्का सिक्का।

खोटा सिक्का है नहीं छोड़ता पीछा 'गौतम',
लौट कर आयेगा है कौल का पक्का सिक्का।

---

1 *शोभा* 2 *पॉकेट* 3 *आधा पैसा* 4 *पासे वाला*

न हौसला बचा, न बचा पास में औसान

न हौसला बचा, न बचा पास में औसान[1],
जीते हैं, अगरचे रहा जीना नहीं आसान।

रहने लगे परिंदे[3] क़फ़स[4] में खुशी-खुशी,
है सनसनी हवाओं में, है आ रहा तूफान।

पैरों तले ज़मीन खिसकने की ख़बर है,
पेड़ों पे समझदारों ने है बांध ली मचान।

मंदिर के शंख-ओ-घंटी की आवाज़ मंद है,
बेनूर-सी लगने लगी है नूर-ए-अज़ान[5] ।

एक दूसरे का खौफ़ है साक़ी और रिंद[6] को,
ये क्या गजब है देखिये मयखाना है वीरान।

फिसलन भरी ढलान पर सब रेंग रहे हैं,
और शोर कर रहे हैं सावधान, सावधान।

सर-दर्द दर्दे-दिल से है आगे निकल गया,
सर को पकड़ के बैठा परेशान है लुक़मान[7] ।

फैला है चारों ओर कंक्रीट का जंगल,
संजीवनी क्या खोज कर ला पायेंगे हनुमान।

इंसान की औकात है क्या, कुछ नहीं 'गौतम',
माना है पहलवानों ने भी, वक्त है बलवान।

---

1 *विवेक* 2 *यद्यपि* 3 *पंछी* 4 *पिंजरा* 5 *मस्जिद से पुकार*
6 *शराबी* 7 *हकीम लुकमान*

वो आज कैसे सहसा मेहरबान हो गया

वो आज कैसे सहसा मेहरबान हो गया,
मैं सोच-सोच कर बहुत हैरान हो गया।

करता नहीं है एतबार कोई भी जिसका,
वो जानो-माल का है निगहबान[1] हो गया।

नासेह[2] बंद कीजिये ईमान की बातें,
पैसा ही आज सबका है ईमान हो गया।

घर से निकलता रोज़ सुबह सू-ए-हिमालय[3],
फिर अपने घर में रात का मेहमान हो गया।

चेहरे पे एक चेहरे का पहले भी था रिवाज़[4],
अब उस पर ये नक़ाब का फ़रमान हो गया।

तेरी ग़ज़ल तुझी को मुबारक हो मेरे दोस्त,
चेहरा तुम्हारी ग़ज़ल का उन्वान[5] हो गया।

अब अपने घर में अपनी जगह ढूँढ़ रहे है,
हमसे ज़रूरी घर का ये सामान हो गया।

कुछ यार आके हाल-चाल ले गये मेरा,
सिर पर हमारे यारों का एहसान हो गया।

सिर पर उठाने आयेंगे अब लोग आसमान,
इक मामले का देखो समाधान हो गया।

रख दी नई तारीख़ पर फिर से नई दलील,
और फिर नई तारीख़ का एलान हो गया।

झुक-झुक के वोट माँगा था उसने अवाम[6] से,
अब आज वो अवाम का सुल्तान हो गया।

बच्चे झगड़ के फिर से लगे खेल खेलने,
मुद्दा उलझने वाला था, आसान हो गया।

सब लोग राजपथ पे हैं चलने लगे 'गौतम',
जनपथ बहुत बेहाल और सुनसान हो गया।

---

1 *रखवाला* 2*नसीहत देने वाला* 3*हिमालय की ओर*
4*प्रथा* 5 *शीर्षक* 6*जनता*

तहज़ीब लाजवाब, पहले आप पहले आप

तहज़ीब लाजवाब, पहले आप पहले आप,
है खूब ये आदाब, पहले आप पहले आप।

बैठे थे भर के जाम मगर पी नहीं सके,
दोनों थे बा-आदाब, पहले आप पहले आप।

रोटी को रख के बीच में भूखे ही सो गये,
रोटी हुई पुर-आब, पहले आप पहले आप।

मक़्तल से रूठ कर के है क़ातिल चला गया,
मक़्तूल थे नायाब, पहले आप पहले आप।

महबूब के दर पर अता सजदा नहीं हुआ,
माहौल था जनाब, पहले आप पहले आप।

मुंसिफ ने कहा करिये बयाँ मामला क्या है,
दोनों ही थे नवाब, पहले आप पहले आप।

अंदाज़-ए-आदाब से वाकिफ नहीं हैं जो,
करता है इज़्तिराब[1], पहले आप पहले आप।

तिनका हो अगर एक तो लेंगे न सहारा,
हों चाहे ग़र्क़े-आब[2], पहले आप पहले आप।

आसान नहीं छोड़ना तहज़ीब का दामन,
हो लम्हा-ए-अज़ाब[3], पहले आप पहले आप।

अंदाज़-ए-गुफ़्तगू यहाँ का ख़ास है 'गौतम'
है लखनऊ जनाब, पहले आप पहले आप।

---

[1] *व्याकुल* [2] *पानी में डूबना* [3] *आफत काल*

पास मेरे नहीं कुछ ख़ास बताने के लिये

पास मेरे नहीं कुछ ख़ास बताने के लिये,
ज़ख्म हैं जो नहीं होते हैं दिखाने के लिये।

उसने देकर जवाब कर दिया खामोश मुझे,
दिल बनाया गया आशिक़ का दुखाने के लिये।

रख लिया साक़ी ने नासेह को मयख़ाने में,
यह किया उसने इंतजाम उठाने के लिये।

हम भी जायेंगे हरम[1], कुफ़्र[2] से तौबा करने,
एक बुत पहले मिले कुफ़्र सिखाने के लिये।

जी रहे उसके लिये जिसने मिटाया हमको,
कौन कम्बख़्त जी रहा है ज़माने के लिये।

हाले-दिल पूछने को आने का वादा है, मगर
आदमी चाहिये कालीन बिछाने के लिये।

सारा दिन सब गुज़ार देते हैं घर के बाहर,
एक घर फिर भी ज़रूरी है ठिकाने के लिये।

माज़ी[3] तू इतना थका दे कि नींद आ जाये,
चाहिये कुछ भी नहीं हमको बिछाने के लिये।

ये अदालत है ख़ास क़ायदा इसका 'गौतम',
साथ में रख वकील केस बनाने के लिये।

---

[1] *मस्जिद* [2] *बुत पूजा का अपराध* [3] *अतीत*

साहिल पे बैठ कर यूँ आबे-रवाँ न देखें

साहिल पे बैठ कर यूँ आबे-रवाँ[1] न देखें,
निकले हैं सू-ए-मंज़िल[2] फिर कारवाँ न देखें।

आतिश-रवाँ[3] है सहरा, अब इसका नाज़[4] देखें,
रक़्स-ए-रवाँ[5] न देखें, रेगे-रवाँ[6] न देखें।

निकले हैं देखने तो सारे जहाँ को देखें,
अहले-जहाँ[7] न देखें, बार-ए-जहाँ[8] न देखें।

हैरत जदा है करता मंजर, कहाँ न देखें,
क्या हम यहाँ न देखें, क्या हम वहाँ न देखें।

पैरों को पकड़े राही मिल जायेंगे सफ़र में,
अज़्म-ए-निहाँ[9] को देखें, दर्दे-निहाँ[10] न देखें।

सौ मरहलों[11] से होकर मंज़िल पे पहुँचते हैं,
हम हौसले को देखें, दौरे-गिराँ[12] न देखें।

महफ़िल का कायदा है जो मानता है 'गौतम',
ज़ोर-ए-बयाँ[13] तो देखें, असले-बयाँ[14] न देखें।

---

[1] बहता पानी [2] लक्ष्य की ओर [3] आग का दरिया
[4] सौंदर्य [5] रेत के टीलों का नृत्य [6] उड़ती रेत
[7] दुनिया वालों को [8] दुनिया का बोझ (समस्या)
[10] गुप्त पीड़ा [11] चरण [12] कठिन समय
[13] बयान का दम [14] वास्तविक अर्थ

दौरे-सितम ने सबको आलिम बना दिया है

दौरे-सितम ने सबको आलिम[1] बना दिया है,
बेज़ार-तबीयत[2] को ज़ालिम[3] बना दिया है।

था नागवार[4] पहले लोगों का गले पड़ना,
लोगों का गले मिलना क्राइम[5] बना दिया है।

रिंदों से तंग आकर सुनते हैं मयकदे में,
नासेह को साक़ी ने हाकिम बना दिया है।

सूरत जो सामने है उससे है सबको खतरा,
हों लोग पसे-परदा[6] लाज़िम[7] बन दिया है।

कोई न घर से निकले बे-वक्त और बे-मौका,
नाज़िम[8] को अपने घर में ख़ादिम[9] बना दिया है।

ये रास्ता अज़ल[10] से सू-ए-अजल[11] है जाता,
सबके लिये सफ़र ये दाइम[12] बना दिया है।

करने लगे वुज़ू सब अब देखो बिना हुज्जत,
सबको ही कोरोना ने मुस्लिम बना दिया है।

आया है दौर-ए-आफ़त, ले नाम रब का 'गौतम',
सबको दी नज़रबंदी, मुजरिम बना दिया है।

---

1 *विद्वान/समझदार* 2 *अप्रसन्न मन* 3 *निष्ठुर*
4 *नापसंद* 5 *अपराध* 6 *परदे के पीछे*
7 *आवश्यक* 8 *व्यवस्थापक* 9 *चपरासी*
10 *अनादि काल से* 11 *मृत्यु की ओर*
12 *सनातन*

क़दमों के ठहरने से ठहरती नहीं है राह

क़दमों के ठहरने से ठहरती नहीं है राह,
मिलते हैं रोज़ राह में राही कई गुमराह।

ताला लबों पे हो, चाभी दरिया के हवाले,
हुक्काम[1] की पहली पसंद ख़ास है चुप-शाह[2]।

हंगामा-ए-कोताह[3] से पड़ता नहीं कुछ फ़र्क़,
रहता नहीं ज़ेहन में कोई क़िस्सा-ए-कोताह।

होती नहीं हैं ख़त्म वकीलों की दलीलें,
मुंसिफ़ बहुत लाचार है, लाचार बारगाह[4]।

मेरा कलाम सुनके सब खामोश हो गये,
ज़ी-जाह[5] के कलाम पर निकली है वाह-वाह।

लगता अजीब-सा है मगर ये है हक़ीक़त,
होता है वो तबाह जो करता है हक़-आगाह[6]।

सच घूम कर रुक जाता है दो-चार-दस कदम,
जाती है बड़ी दूर तक जो होती है अफवाह।

फितरत[7] है पुर-मिज़ाह[8], ज़बाँ हिस्स-ए-मिज़ाह[9],
इक दिन हमें भी दीजिये मौका कहें वल्लाह[10]।

इस दौर में उसका रसूख़[11] ख़ास है 'गौतम',
अख़बार में रहता है जो सप्ताह-दर सप्ताह।

---

1 शासक वर्ग 2 ख़ामोशी 3 छोटा
4 दरबार/अदालत 5 ताकतवर 6 अधिकार
7 स्वभाव 8 विनोद प्रिय 9 हास्य की समझ
10 खुदा की क़सम 11 प्रभाव/पहुँच

पके हैं बाल सिर के या हुए सफ़ेद यूँ ही

पके हैं बाल सिर के या हुए सफ़ेद यूँ ही,
उसे ग़फ़लत[1] है कुछ या कर रहा है खेद यूँ ही।

तुम्हारे कूचे में आने पे लगी पाबंदी,
वज़ह है ख़ास कोई या किया आएद[2] यूँ ही।

तेरा विसाल नहीं तो तेरा फ़िराक़ सही,
किसे मिली है यहाँ लज़्ज़ते-जावेद[3] यूँ ही।

हर एक आस्ताँ[4] पे करता कौन है सजदा,
ख़ास बुत के बिना कब आता अक़ाएद[5] यूँ ही।

काम होगा उसे कुछ पहले तसल्ली कर लें,
कौन देता है दूसरों को फवाएद[6] यूँ ही।

रक़ीब दोस्त बन गया है तो मन-भेद छिपा,
बे-वज़ह कौन भुला देता है मत-भेद यूँ ही।

फ़क़ीर-ओ-शाह-ओ-सिकंदर चले गये सारे,
ये कायनात रही ज़िंदा-ए-जावेद[7] यूँ ही।

ये क़ैद-ए-ज़िंदगी[8] तो काटनी होगी 'गौतम',
तुम किस उम्मीद से करते गिला-ए-क़ैद[9] यूँ ही।

---

1 *बेपरवाह* 2 *लागू* 3 *अनंत सुख*
4 *ड्योढ़ी* 5 *विश्वास/ईमान* 6 *लाभ/उपकार*
7 *अमर/शाश्वत* 8 *जीवन की कैद (बंधन)*
9 *कैद का उलाहना*

देखा धुएँ के बाद सबको आग ढूँढ़ते

देखा धुएँ के बाद सबको आग ढूँढ़ते,
बेहतर था अगर राख में सुराग़ ढूँढ़ते।

मय पीना हुआ फ़र्ज़ था रिंदों के वास्ते,
वो होश में नहीं थे कहाँ काग[1] ढूँढ़ते।

बतलाते अगर आप गिरा झुमका कहाँ पर,
बेलौस[2]-ओ-बेग़रज़[3]-ओ-बेलाग[4] ढूँढ़ते।

माना चमन में है नहीं मौसम बहार का,
काग़ज़ के गुलों में नहीं पराग ढूँढ़ते।

तारीक़ियों[5] से डर नहीं लगता जनाब को,
दिन ढलने से पहले अगर चराग़ ढूँढ़ते।

पहले जो करते बात राग[6] और विराग[7] की,
यूँ घर को छोड़ कर क्यों सब्ज़बाग़[8] ढूँढ़ते।

ता-उम्र आशनाई[9] का चर्चा किया 'गौतम',
रोज़-ए-सफ़र[10] मिले वही बैराग[11] ढूँढ़ते।

---

[1] *लकड़ी की डाट* [2] *बे-झिझक* [3] *बिना स्वार्थ*
[4] *बिना रियायत* [5] *अंधेरों से* [6] *अनुराग/प्रेम/मोह*
[7] *रागहीन* [8] *झूठे सपने* [9] *प्रेम/मोह*
[10] *मृत्यु काल* [11] *वैराग्य*

अलमबरदार से पहले चिलमबरदार होते हैं

अलमबरदार से पहले चिलमबरदार होते हैं,
मशक़्क़त से नये जाँबाज़ कुछ तैयार होते हैं।

वफ़ादारों की चाहत है तो ये भी याद रखियेगा,
वफ़ादारों में ही अक्सर छिपे गद्दार होते हैं।

मोहब्बत करने वालों के तजुर्बों ने बताया है,
संभल के जायें, कू-ए-यार[5] तो बल-दार[6] होते हैं।

न मिलने के लिये मसरूफ़ियत[7] तो इक बहाना है,
गरज पड़ जाये तो फिर रोज़ ही दीदार[8] होते हैं।

किसी को पैरहन[9] से तौलना अच्छा नहीं होता,
जो खद्दर पहनते हैं उनमें भी ज़रदार[10] होते हैं।

ज़रूरी तो नहीं बेचैन होकर ही गुज़ारें दिन,
सुबह के वक्त हालाँकि[11] लिये अख़बार होते हैं।

हमें एहसास हो जाता है अब कुछ होने वाला है,
किसी हाकिम के चेहरे पर अगर अफ़कार[12] होते हैं।

बहुत जलसों में जाकर बात छोटी-सी समझ पाये,
वहाँ पर भीड़ जुटती है जहां फ़नकार होते हैं।

दरख़्तों से सबक़ सीखा है हमने दुनियादारी का,
उन्हीं को मारते पत्थर हैं जो फलदार होते हैं।

कोई इनकार मायूसी का बाइस[13] क्यों बने 'गौतम',
इसी इनकार में अक्सर निहाँ[14] इक़रार होते हैं।

---

[1] *ध्वजवाहक* [2] *चिलम उठाने वाला* [3] *मेहनत* [4] *जुझारू*

5 यार के घर के रास्ते 6घुमावदार 7व्यस्तता 8 दर्शन
9लिबास 10मालदार 11यद्यपि 12चिंता की लकीर
11कारण 12छिपा

जो मुद्दा ज़ेरे-बहस था अगर ख़बर करते

जो मुद्दा ज़ेरे-बहस[1] था अगर ख़बर करते,
पसंद उनको जो आता वही नज़र[2] करते।

जो इल्म होता बेज़ुबान की है कद्र वहाँ,
तो अपने क़त्ल का इल्ज़ाम अपने सर करते।

बहुत अच्छा हुआ सीने पे कोई बोझ नहीं,
किधर छिपाते मुँह गर वो मेरा ज़िकर करते।

बड़े फ़नकार हर किरदार में ढल जाते हैं,
सुबह कुछ करते हैं फिर रात में दीगर[3] करते।

जिये ता-उम्र ही बेलौस-ओ-बेलाग[4] अगर,
किसलिए आख़िरी दम खुद को बे-वक़र[5] करते।

तमाम उम्र गुज़ारी अंधेरे कमरों में,
किसलिए चांदनी को आज हम-बिस्तर करते।

हम उनके रू-ब-रू शिकवा-गिला करें कैसे,
वो हँस-के शिकवा-गिला को हैं बे-असर करते।

अहले-दुनिया का रंग ढंग है यही 'गौतम',
जान को अपनी बिना बात हो दूभर करते।

---

[1]बहस में [2]पेश करना [3]दूसरा/उलटा
[4]बिना रियायत और झिझक [5]अमर्यादित

कोई ख़याल न होता तो सोचो क्या होता

कोई ख़याल[1] न होता तो सोचो क्या होता,
कोई मलाल[2] न होता तो सोचो क्या होता।

जवाब ढूँढ़ते रहते हैं हम सवालों का,
कोई सवाल न होता तो सोचो क्या होता।

मैं फ़िक्रमंद होने लगता हूँ बैठे-ठाले,
कोरोना-काल[3] न होता तो सोचो क्या होता।

कोई बवाल हुआ है तो बड़ी बात नहीं,
अमन बहाल न होता तो सोचो क्या होता।

नया गठजोड़ बनाया है कुछ रक़ीबों[4] ने,
ये गोलमाल न होता तो सोचो क्या होता।

ख़ास फ़नकार की ख़ातिर जमा थी भीड़ वहाँ,
एक नक़्क़ाल[5] न होता तो सोचो क्या होता।

ख़ास किरदार ज़रूरी है कहानी के लिये,
एक बेताल न होता तो सोचो क्या होता।

एक जंजाल से ज्यादा नहीं दुनिया 'गौतम'
यही जंजाल न होता तो सोचो क्या होता।

---

[1] *विचार* [2] *अवसाद* [3] *कोविड/कोरोना संक्रमण का समय*
[4] *परस्पर प्रतिद्वंदी* [5] *स्वांग करने वाला*

दिलो-दिमाग़ में हंगामा-सा मचा क्या है

दिलो-दिमाग़ में हंगामा-सा मचा क्या है,
बहुत हैरान हूँ घर में अभी बचा क्या है।

ज़िन्दगी को जिया है जिसने कई टुकड़ों में,
कैसे समझायेगा वो होता समूचा क्या है।

चलो-चलो की बात कर रहे अहले-दुनिया,
कूच पर निकले हैं सब लोग मोरचा[1] क्या है।

अपना दामन बचाये जा रहे थे ठहर गये,
बीच बाज़ार में न जाने अब जचा क्या है।

जिस्म है रंगमहल, भूल भुलैया जैसा,
किधर है छत, दरो-दीवार-दरीचा क्या है।

बारहा आँधियाँ क्यों जाती रहीं सू-ए-चमन,
पेड़ बे-बर्ग[2] हुए, अब बचा-खुचा[3] क्या है।

मेरे बारे में सुना है ये लोग कहते हैं,
शरीफ आदमी है हाथ में परचा क्या है।

हम तो पढ़ पाते नहीं अपना मुकद्दर 'गौतम',
ज़ाइचा-गर बतायें कहता ज़ाइचा[5] क्या है।

---

[1] *मुकाबले का स्थान (गंतव्य)* [2] *पत्ता-पत्ती रहित* [3] *शेष*
[4] *जन्मकुंडली बनाने वाले/पंडित* [5] *जन्मकुंडली*

शजर सूखा नहीं उसमे नमी है

शजर[1] सूखा नहीं उसमे नमी है,
अभी जड़ उसकी मिट्टी में जमी है।

गवाही दे रहे पत्ते ज़मीं पर,
गुज़रती है जो आँधी ऊधमी है।

जो है फुटपाथ पर बेहिस[2]-ओ-हरकत[3],
कोई पत्थर नहीं है, आदमी है।

अदालत में मना है शोर करना,
मगर माहौल हर-सू दरहमी[4] है।

कमी कोई नहीं दिखती कहीं भी,
ये क्यों लगता है कोई तो कमी है।

हुआ क्या उसको सबसे पूछता है,
हथेली में कहाँ सरसों जमी है।

दवा से ज़्यादा है आराम देता,
दुआ का लहज़ा जिसका मरहमी है।

महानगरी में हा-ओ-हू[5] बहुत है,
ये हा-ओ-हू भी लगती मातमी[6] है।

नहीं होता है रिश्ता एकतरफा,
मोहब्बत और अदावत[7] बाहमी[8] है।

हवा में मुट्ठियाँ लहरा रही हैं,
ये कसरत है या हरकत मौसमी है।

मुझे सब्ज़ा[9] सुबह मिलता है भीगा,
किसी का दर्द लगता दाइमी[10] है।

गले पड़ जाते है कुछ लोग 'गौतम',
बना कर रखना दूरी लाज़िमी[11] है।

---

[1] *पेड़* [2] *बे-ख़बर* [3] *निश्चेष्ट* [4] *कोलाहल/हंगामा*
[5] *हल्ला-गुल्ला* [6] *मरने पर रोना-चिल्लाना*
[7] *शत्रुता* [8] *पारस्परिक* [9] *घास*
[10] *स्थायी* [11] *आवश्यक*

चाहता कौन नहीं फिर ख़त-ओ-किताबत हो

चाहता कौन नहीं फिर ख़त-ओ-किताबत[1] हो,
बशर्ते पास में लोगों के थोड़ी फ़ुर्सत हो।

ज़ेहन मसरूफ़ WhatsApp में हो जाता है,
अगर जो छूटी कोई post तो क़यामत हो।

पढ़ो या ना पढ़ो, कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता है,
मगर अंगूठा लगाने की तो शराफ़त हो।

अगर चिपका सकें चिपकाइये संग में फोटो,
सुबह good morning कहने की नेक आदत हो।

Virtual world के कुछ क़ायदे होते हैं मियाँ,
बधाई जन्मदिन पे देने की रिवायत हो।

दिन में सौ बार joke मारिये, मगर कोई-
डालिए एक पोस्ट जिसमे कुछ नसीहत हो।

करिये उस दोस्त को सलाम नज़रबंदी में,
जो दिन गुज़ारने में आपका सहायक हो।

बस यही देखना है भेज कर मेरी ही ग़ज़ल,
Like क्यों की नहीं? इस बात की शिकायत हो।

झेलते रोज़ WhatsApp को सब हैं 'गौतम',
आप भी झेलिये, गर झेलने की ताकत हो।